चन्दामामा
अगस्त १९९०

I HAVE 14 BEST FRIENDS
TO HELP ME
TOP MY CLASS
H to 6H for Linework
Apsara DRAWING
B to 6B for Shading
Apsara DRAWING
HB for Writing
Apsara DRAWING
AUSTRALIA
Apsara Drawing Pencils come in 14
grades and help me in so... so
many subjects. My classmates also
include Apsara Poster Colours,
Water Colour Tubes, Oil Pastels and
Wax Crayons. All, toppers.
Apsara®
DRAWING PENCILS
For information, write to:
Hindustan Pencils Limited,
510, Himalaya House, Bombay-400 001
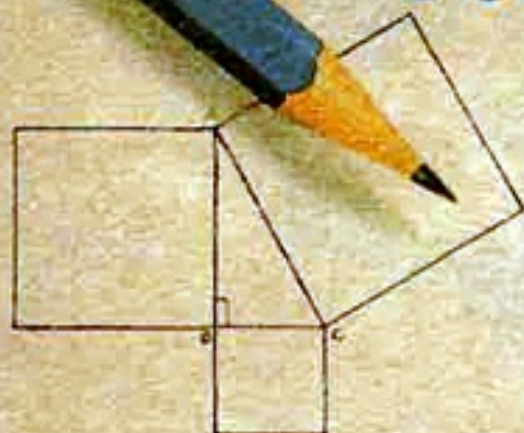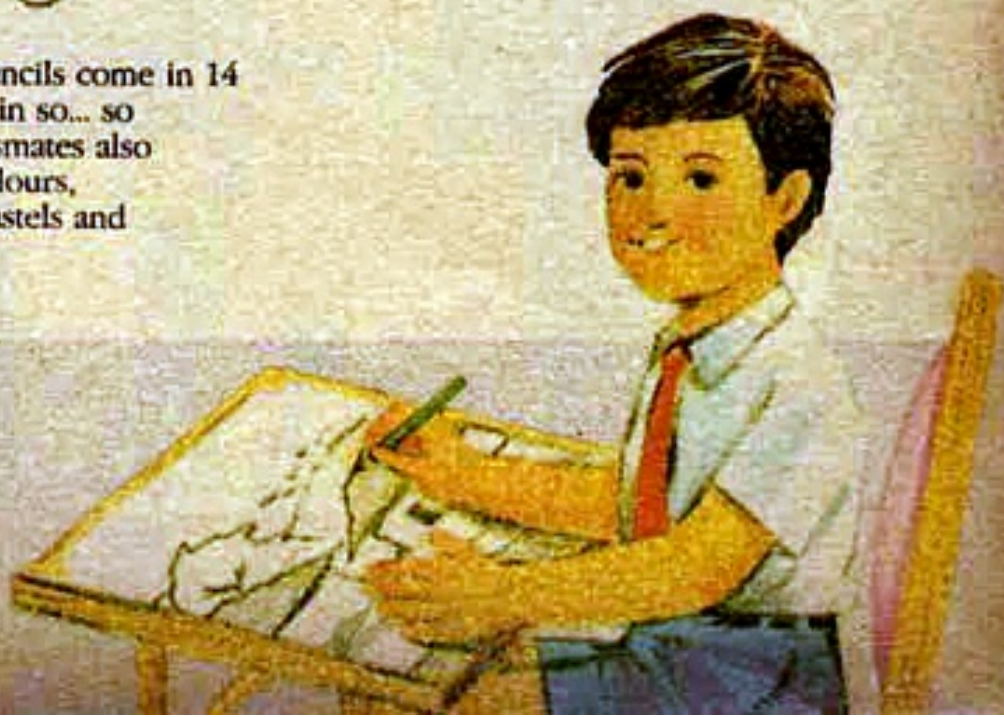
हर माँ जानती है:
शिशु के ख़ुराक में दाल
कितना आवश्यक है.

चन्दामामा

अगस्त १९९०

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति: ३-००

वार्षिक चन्दा: ३६-००

WANTED

Teddy and his cronies Wobbit, Bow Wow, Papa Hare and Jumbo are on the loose in this city. They've already broken into several homes. Don't be misled by their soft and cuddly looks. They're trained to take on the toughest torture test ever — childhandling. It's also rumoured that they cast a magical spell over kids that can't be reversed. So... watch out. You may be the charmers' next target.

Because making toys is no child's play

Chandamama Toytronix Private Limited, Chandamama Buildings, 188, NSK Salai, Vadapalani, Madras - 600 026.

Mudra M:CTPL:4089

RAMBO IV
No more evil, injustice and crime will be tolerated in this city. The relentless crusader is here. With his famed Zap Gun (the three sound gizmo that's the terror of the underworld) and his fleet of rough 'n tough ready-for-action vehicles — Wrecker, Super Dumper and Fire Engine. And of course, his missile-firing Helicopter. So...breathe easy. The one man army is here.
SAMMO
Mechanical and electronic toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX
In collaboration with Sammo Corporation, S.Korea
Chandamama Toytronix Private Limited, Chandamama Buildings, 188, NSK Salai, Vadapalani, Madras 600 026

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

नशीले पदार्थों से ख़तरा

संयुक्त राष्ट्रसंघ के शिक्षा, विज्ञान एवं संस्कृति के विभाग 'युनेस्को' के निमंत्रण पर २६ जून को सारे संसार भर में 'मादक पदार्थ विरोधी दिन' मनाया गया ।

मादक पदार्थों के सेवन से आज की युवा पीढ़ी तबाही ही ओर बढ़ रही है, मनुष्य के भवितव्य पर इस तरह कुल्हाड़ी का प्रहार हो रहा है । इन नशीले पदार्थों का शिकार बननेवाले युवक ख़ुद तो तबाह हो ही जाते हैं, अपने आस-पास के लोगों को भी दुख-दर्द की गर्त में ढकेल देते हैं । नशीले पदार्थों के सेवन से युवक पहले मानसिक संतुलन को खो देते हैं, यह ख़तरा भी बना रहता है कि वे आसामाजिक और अपराधी बनें । नशीले पदार्थों का व्यवसाय करनेवाले आर्थिक रूप से इतने सुदृढ होते हैं कि छोटे-मोटे देशों की सरकार को मुट्ठी में कर लेते हैं ।

इस ख़तरे से अपने संगी-साथियों को बचाने की हर किसी को कोशिश करनी चाहिए । इस भयानक ज़हरीले दायरे में फँसे किसी को बचाने के लिए बड़ों तथा अध्यापकों से सलाह-मशिवरा कीजिए ।

वर्ष : ४२ अगस्त १९९० अंक : १२

एक प्रति : रु. ३/- वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

डायमण्ड कॉमिक्स
पेश करते हैं,
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट
जाने से पहले कृपया मुझे यह डायमंड कामिक्स पकड़ाते जाइए.
डायमंड कामिक्स (प्रा०) लिमिटेड
2715, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002.
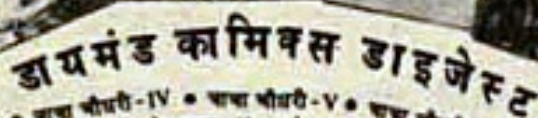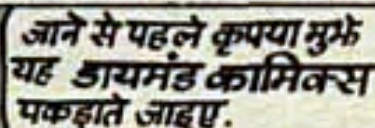
पाकिस्तान में क्या हो रहा है?

सन १९३३ में चौधरी रहमत अली ने 'पाकिस्तान' शब्द का निर्माण किया। इस का अर्थ है 'पवित्र भूमि'।

मज़हब के आधार पर 'भारत उपखंड' को दो भागों में विभाजित करने की बात पर मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में 'मुस्लिम लीग' पार्टी अटल रही थी। लेकिन अनेक बड़े-बड़े समझदार नेताओं ने भी इस बात का विरोध किया था। स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र आदि महान् आदर्शों के साथ मानव जाति एक सूत्र में बँध कर आगे बढ़ रही थी। ऐसे समय पर धर्म के नाम पर देश का विभाजन करना एक 'पीछे कदम' था।

भारत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। अनेक आचार-व्यवहार पाये जाते हैं। कभी कहीं एकाध दंगा-फ़साद का होना आम बात है। इस का हल देश का विभाजन हर्गिज़ नहीं। ऐसी समस्याएँ केवल हमारे देश में ही नहीं, और देशों में भी हैं। आपसी समझदारी, चर्चाएँ और उपयुक्त कानून की मदद से इन समस्याओं को हल किया जा सकता है। ऐसी कोई समस्या नहीं जिस का हल ढूँढ़ना असंभव ही हो।

हमारे देश के प्रमुख नेताओं ने मुस्लीम लीग को समझाया कि वह अलग पाकिस्तान को भूल जाए, इस पर ज़िद न करे। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। वैसे अंग्रेज़ों की कूट-नीति थी कि विभाजन करो और शासक बने रहो। इस लिए अंग्रेज़ों ने परोक्ष में मुस्लिम लीग को भड़काया, और उस की चाह को बल दिया।

आखिर देश का बँटवारा हो कर रहा। फिर भी मुस्लिम लीग ने जिन प्रदशों को माँगा था, वे सभी उसे प्राप्त नहीं हुए। कश्मीर भारत में ही रह गया। इस के बाद पूर्व पाकिस्तान में विद्रोह हुआ और बंगला देश स्वतंत्र बन गया।

वैसे पाकिस्तान की तुलना में भारत में ही अधिक मुसलमान हैं। यहाँ के हिन्दू, ईसाई और बौद्धों की तरह वे सभी भारत को अपनी मातृभूमि मानते हैं। लेकिन बंगला देश को खो कर पाकिस्तान का जो अपमान हुआ उसे वह भूल न सका। कश्मीर में अधिकतर लोग मुस्लिम हैं, इस लिए कश्मीर पाकिस्तान का भूभाग होना चाहिए, यही एक बात बार-बार रटते हुए पाकिस्तान झगड़े-फ़साद पर उतर आया है। कश्मीर के कुछ नौजवानों को हथियारों का उपयोग करने का प्रशिक्षण गुप्त रूप से दे कर कश्मीर में दंगे-फ़साद करने को उकसा रहा है।

वास्तव में पाकिस्तान की आंतरिक परिस्थितियाँ दिन-ब-दिन बिगड़ती जा

रही हैं। भारत से पाकिस्तान जा चुके मुसलमानों और पाकिस्तानी मुसलमानों के बीच अकसर झगड़े, मारपीट, खून-ख़राबा हुआ करते हैं। सरहदी प्रांतों के पठानों को पाकिस्तानी पालकों पर सचमुच कभी विश्वास नहीं जमा था, इस लिए वे अलग हो जाने की धमकी दे रहे हैं। पाकिस्तान में जो विभिन्न पक्षोपपक्ष हैं, उन में हमेशा झगड़े चला चलते हैं। पाकिस्तान की जनता को एक लोककल्याणकारी सरकार अब तक कभी भी प्राप्त नहीं हुई। लोकतंत्र से तो पाकिस्तान दूर ही रहा। बहुत अधिक काल तक सैनिकी अधिकारी ही पाकिस्तान के सर्वेसर्वा बन बैठे। पाकिस्तानी प्रजा को एक स्वतंत्र देश के नागरिकों के समान अपना विकास करने का अवसर ही नहीं मिला। देश की अस्तव्यस्त परिस्थितियों से लोगों का ध्यान मोड़ने के लिए पाकिस्तानी नेता यों कश्मीर के वास्ते झगड़ा खड़ा कर रहे हैं। मज़हब के नाम पर आम जनता को भड़काना, वह भी ऐसे कि मारपीट और रक्तपात हो जाए, बड़े दुख की बात है। इस से पता चलता है कि आज भी आम जनता मज़हब के नाम पर किस तरह धोखा खा रही है!
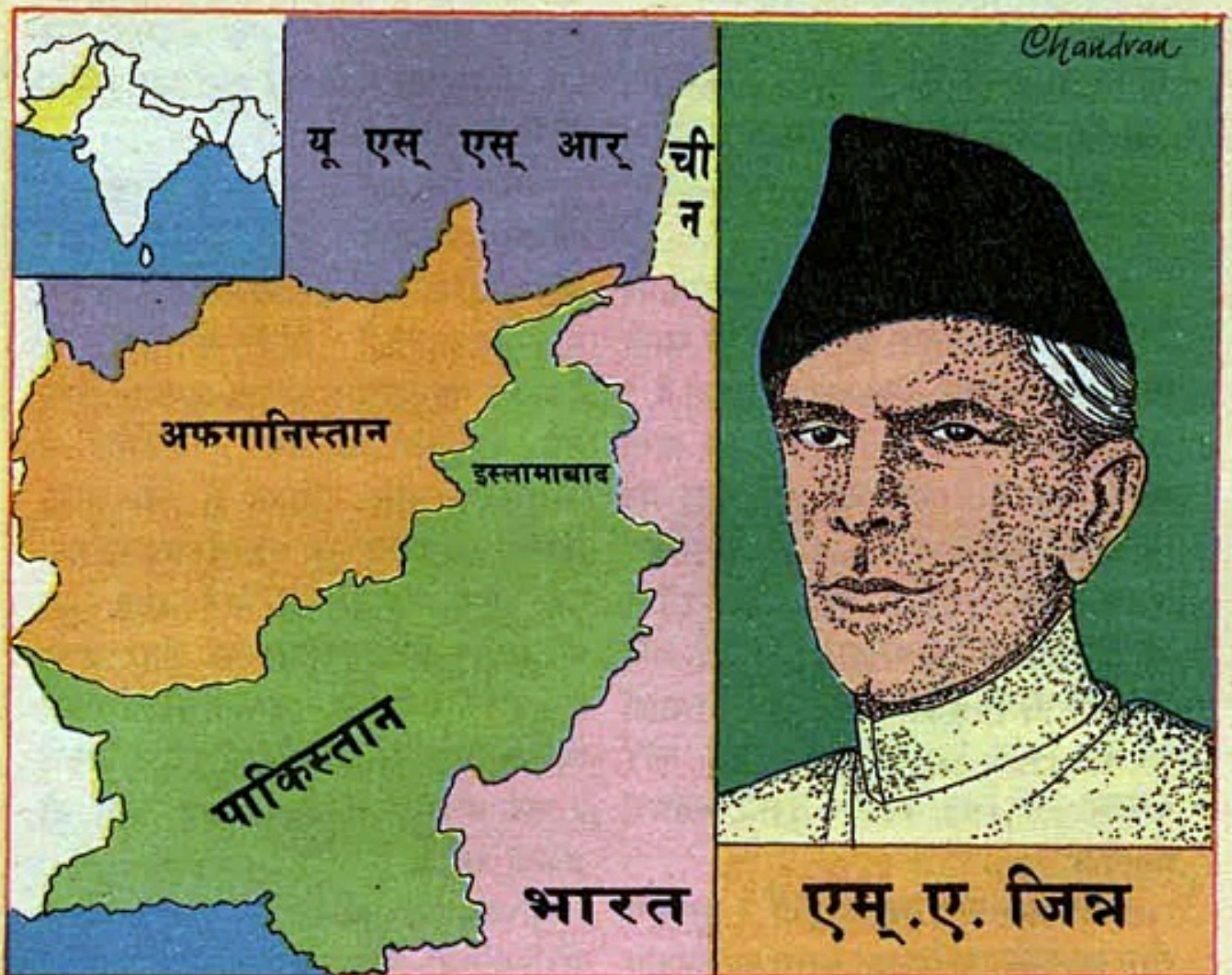
तांबे का कड़ा

सीतापुर में श्रीमुख नामक एक विद्वान रहता था । निस्वार्थ सेवाभाव से वह अनेक विद्यार्थियों को विद्यादान करता था । किसी के सामने वह हाथ नहीं फैलाता था । उसकी अपनी ज़रूरतें बहुत कम थीं । सादगी से जीवन बिताता था । सब से अधिक ज्ञान से उसे प्रेम था । नित्य नए नए ग्रंथों का अध्ययन करता रहता । इसलिये गाँव के लोग उसकी बड़ी इज़्ज़त करते थे और यदाकदा पुरस्कार देकर उसका सम्मान करते थे । उसके परिवार के लिये आवश्यक सारी चीज़ें गाँववाले ही पहुँचाते थे । इससे श्रीमुख के दिन सुख-चैन से कट जाते थे । उसे अपने जीवन में किसी चीज़ का अभाव न था, न किसी बात की चिंता थी

. गाँव के लोग समय समय पर अपनी कठिनाइयों का हाल पूछने श्रीमुख के पास आते । वह यथासंभव सब का मार्ग-दर्शन करता ।

श्रीमुख का पुत्र चतुर्मुख पढाई में बिलकुल रुचि नहीं रखता था । वह हमेशा आवारागर्दी ही करता रहता था । बेहद शोख व नटखट था वह! अपनी बेजा हरकतों से गाँववालों की नाकों में दम कर रखा उसने! चूँकि श्रीमुख को लोग बहुत मानते थे, गाँववाले उसका सारा ऊधम सहकर चुप रहते थे । श्रीमुख भी यह सब अच्छी तरह जानता था और अपने इकलौते पुत्र के भविष्य के बारे में सोचकर दुखी हो जाता था । कई जगह उसने अपने पुत्र को नौकरी दिलाने की कोशिश की, पर ऐसे लडके को कोई नौकरी देने के लिए तैयार नहीं था । कई तरह से उसको सुधारने की कोशिश कर के भी असफल ही रहा ।

एक दिन श्रीमुख का पुराना शिष्य महानन्द उसे मिलने आया । बहुत दिनों से गुरु के दर्शन की इच्छा उसके मन में थी । पर

शारदा रस्तोगी

किसी न किसी कारण से आज तक यह संभव नहीं हुआ था । महानन्द ने श्रीमुख के पास सकल शास्त्रों का अध्ययन किया था । महानन्द बड़ा ही बुद्धिशाली छात्र था । कोई ग्रंथ एक बार पढ़ने पर वह उसके दिमाग़ पर नक्श हो जाता था । इसी कारण श्रीमुख को अपने इस शिष्य के प्रति अपार प्रेम था । फिर उसने कठिन तपस्या कर अनेक अद्‌भुत सिद्धियाँ प्राप्त कीं । अब वह अपने गुरु श्रीमुख को गुरुदक्षिणा देने चला आया था ।

"तुम अच्छा नाम कमाओ, यही मेरे लिये गुरुदक्षिणा होगी ।" श्रीमुख ने शिष्य महानन्द से कहा । लेकिन महानन्द तो गुरुदक्षिणा देना ही चाहता था । तब गुरु ने अपने पुत्र के बारे में उससे कहकर उसे सुधारने का काम शिष्य को सौंपा । श्रीमुख ने महानन्द को अपने पुत्र के स्वभाव के बारे में समझा कर कहा । उसके दोषों से उसे अवगत कराया । और कहा—"मैं ने कई शिष्यों को पढ़ाया-लिखाया, पर खेद है कि अपने इस पुत्र के लिए मैं कुछ कर न सका । तुम अपनी कुशलता का प्रयोग कर इसे राह रास्ते पर लाने की कोशिश करके देखो ।

महानन्द ने चतुर्मुख को बुलाकर उससे कुछ बातें कीं । और उसे सही रास्ते पर लाने के लिये कुछ प्रयत्न भी किये । मगर इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ, चतुर्मुख बिलकुल नहीं सुधरा । इसपर कुछ सोचकर महानन्द ने एक निर्णय लिया । अपने तपोबल से उसने एक ताँबे के कड़े का सृजन किया । उसे चतुर्मुख की कलाई में पहनाकर कहा, "इसे हमेशा अपनी कलाई में रहने दो । विद्वत्ता एवम् सद्‌वर्तन में तुम बेजोड़ रहोगे । इस कड़े से सिर्फ़ तुम अकेले लाभ उठा सकोगे । रोज़ नहाते वक़्त इस ताँबे के कड़े को साफ़ करो; नहाकर फिर इसे पहने रहो । इससे अवश्य ही तुम्हारी भलाई होगी ।"

उसी दिन से चतुर्मुख में बड़ा परिवर्तन आया । अब वह हर किसी से बड़े अदब से पेश आने लगा । साथ साथ वह अपनी अपूर्व विद्वत्ता का भी प्रदर्शन करने लगा । महानन्द के इस प्रयास पर श्रीमुख को अतीव प्रसन्नता हुई । श्रीमुख ने अपने पुत्र की विद्वत्ता की परीक्षा की और सोचने लगा कि वह अब अपने से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ विद्वान बन

गया है ।

शिष्य महानन्द से श्रीमुख ने कहा, "पुत्र, तुम ने जो गुरुदक्षिणा मुझे दे दी है, वह बड़ी अपूर्व और अद्भुत सिद्ध हुई है । मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूँ ।"

इसके बाद अपने गुरु के पाँव छू कर महानन्द अपने रास्ते चला गया ।

एक दिन श्रीमुख ने अपने पुत्र महानन्द को बुलाकर कहा, "पुत्र, तुम्हारी विद्वत्ता यूँ बेकार रहना अच्छा नहीं लगता । इससे अच्छा होगा कि तुम राजधानी चले जाओ और वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों के समक्ष अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करो । इसी से तुम्हारी विद्वत्ता सार्थक होगी । राजा अगर तुम्हारी विद्वत्ता से प्रभावित हुआ, तो तुम्हें राजदरबार में अच्छा पद मिल सकता है ।"

पिता की इच्छा के अनुसार चतुर्मुख राजधानी पहुँचा, लेकिन उसे राजा के दर्शन का लाभ नहीं हुआ ।

किसीने उससे कहा कि विद्वत्ता का प्रदर्शन करने के लिये हर किसीको पहले दरबारी पंडित विद्याधर को खुश करना पड़ता है । तब चतुर्मुख भी विद्याधर से जा मिला, मगर वहाँ भी उसकी दाल न गली । विद्याधर ने एक भी बात न करते हुए उसे वहाँ से निकाल दिया ।

बेचारा चतुर्भुज अब ऊब चुका और उस ने अपने गाँव लौटने का विचार किया । मगर अपने पिता की आज्ञाका पालन किये बिना ही लौट जाना उसे अच्छा नहीं लगा ।

और कुछ दिन बीत गये । चतुर्मुख के पास के पैसे भी अब ख़तम हो गये, इस लिये परेशान होकर वह सराय के मालिक से मिला, और उसने कहा, "महोदय, मेरा सारा धन ख़तम हो गया है । लेकिन जिस राजदर्शन के हेतु यहाँ आया था, वह तो अभी तक मिला ही नहीं! वह मिलने तक आप यदि मुझे यहाँ रहने दें, तो बदले में मैं हररोज़ आप को गीतासार सुनाया करूँगा ।

सराय का मालिक चतुर्मुख के बर्ताव से बड़ा खुश था । इसलिये उसने यह प्रस्ताव स्वीकार किया । उसी दिन से चतुर्मुख सराय के मालिक को भगवद्गीता के श्लोकों का अर्थ समझाने लगा । चतुर्मुख के इस गीतासार के विवरण से सराय का मालिक

बहुत ही प्रभावित रहा ।

एक दिन वहाँ के राजा ने राजधानी के दस सरायों के मालिकों को बुलवाकर कहा, "तुम लोक हमारी राजधानी की सरायों की देखभाल बड़ी ही अच्छी तरह से कर रहे हो । मुझे बताओ, तुम यह सब किस प्रकार करते हो? तुम लोगों की सफलता का कारण मैं जानना चाहता हूँ ।"

इसपर दूसरी सरायों के मालिक अपने बड़प्पन में कई प्रकार की बातें करने लगे । लेकिन जिस सराय में चतुर्मुख ठहरा था, उस सराय के मालिक ने कहा, "वैसे एक सराय के जो आम नियम होते हैं, उन्हीं का मैं पालन करता हूँ । उसके बाद भगवान की कृपा है; बस! उस से सब ठीक ठाक चल रहा है ।"

राजा ने आश्चर्य से कहा, "अरे! तुम भगवान की कृपा के बारे में बोल रहे हो; क्या तुम्हें अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं?"

"प्रभु, हमें जो करना चाहिये,वही कर देता हूँ । उसका फल या महानता अपनी नहीं होती । किसान खेत जोतकर फ़सल पैदा करना चाहता है । मगरबारिश होने पर ही वह यह सब कर सकता है न! यदि बारिश ही नहीं हुई, तो किसान अपनी शक्ति से क्या कर सकता है? केवल बारिश होने मात्र से भी काम नहीं चलता, इन्सान का प्रयत्न भी चाहिये ही । इसलिये भगवान की कृपा और मानव की मेहनत इन दोनों की नितान्त आवश्यकता होती है ।" सराय के मालिक ने कहा ।

इसपर चकित होकर राजा ने कहा, "मुझे तो तनिक कल्पना भी नहीं थी कि आम जनता में इतने बड़े ज्ञानी भी हैं । कल मैं दरबार में तुम्हारा सम्मान करना चाहता हूँ ।"

इस पर सराय के मालिक ने कहा—"प्रभु! इस सम्मान के लिए मैं योग्य नहीं हूँ । जिस ने मुझे यह ज्ञान दिया, वह पंडित आप के दर्शन के लिए कई दिनों से प्रतीक्षा कर रहा है । उस की इच्छा की पूर्ति कीजिएगा?"

राजा ने सराय के मालिक से कहा कि दूसरे दिन वह चतुर्मुख को अपने यहाँ ले आएँ । सराय के मालिक ने वापस जाकर यह सब चतुर्मुख से कहा । चतुर्मुख ने सराय के मालिक के प्रति कृतज्ञता प्रकट की, और दूसरे दिन राज-दरबार के लिए चल दिया । वहाँ

चतुर्मुख ने पुराणों पर प्रवचन किया, जिसे सुन कर सभी दरबारी पंडित चकित हो गये ।

राजा ने चतुर्मुख की भूरि भूरि प्रशंसा की । उसने कहा—"आप महान् पंडित हैं । मुझ से मिलने से पहले आप दरबारी पंडित विद्याधर से मिल लेते तो इतने दिन इंतज़ार करने की नौबत न आती ।"

तब चतुर्मुख ने राजा से कहा कि वह खुद एक बार विद्याधर से मुलाक़ात कर चुका था, लेकिन दरबारी पंडित ने चिड़चिड़ा कर उसे अपमानित करके भेज दिया था ।

यह सुन कर राजा को बहुत ग़ुस्सा आया । उसने चतुर्मुख से कहा—"महाशय, आप का ऐसा अपमान हुआ हो तो मुझे बहुत दुख है । इसे मैं अपने दरबार का अपमान मानता हूँ । आप स्वयं मेरे दरबारी पंडित विद्याधर को दण्ड दें, तभी मेरे मन को शांति मिलेगी ।"

चतुर्मुख ने स्वीकृति देते हुए सिर हिलाया, फिर अपनी कलाई से तांबे का कड़ा उतार कर महाराज के हाथ में दे दिया । अब चतुर्मुख विद्याधर के पास गया और अनेक प्रकार के अपशब्द उसे सुनाए । उसकी खूब निंदा की । उस समय चतुर्मुख का बर्ताव एक पंडित का-सा नहीं, किसी अनपढ़-गँवार का-सा रहा । राजा को भी इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ । विद्याधर कुछ कह न सका, लज्जावश सिर झुकाए वे अपशब्द सुन कर दुखी हुआ ।

इस के बाद राजा से चतुर्मुख ने तांबे का कड़ा वापस लेकर पहन लिया । राजा ने

चतुर्मुख से कहा—"महापंडित, मैं ने आप को एक छोटा-सा मौक़ा क्या दिया कि आपने विद्याधर को अनेक गालियाँ दीं । आप का यह बर्ताव इस दरबार के लिए अपमानजनक रहा । मैं सोचता हूँ, इस में भी कुछ रहस्य छिपा है अवश्य! यह क्या रहस्य है, आप मुझे कृपा कर बता सकते हैं?"

चतुर्मुख ने नम्रता के साथ राजा से निवेदन किया—"प्रभु, क्षमा कीजिए । अपने व्यवहार पर मैं स्वयं लज्जित हूँ । मेरी विद्वत्ता मेरी अपनी महानता नहीं है, सब इस ताँबे के कड़े की महानता है ।" फिर अपनी सारी कहानी उसने राजा को सुना दी ।

यह सब कहानी सुन कर राजा और चकित हुआ और उसने कहा—"पंडितवर! तांबे के

कड़े को पहने ही आप विद्याधर को दण्ड देने जाते तो कितना अच्छा होता! कड़ा उतार कर आपने मुझे दे दिया और फिर विद्याधर की निन्दा करने चल दिये । क्या यह आप को उचित लगता है? सराय के मालिक के जैसे एक सामान्य व्यक्ति में उत्तम संस्कारों का प्रवेश करानेवाले आप के मन में सद्भाव ही आना चाहिए था न?"

इस पर मुस्कुराते हुए चतुर्मुख ने कहा—"प्रभु, विद्या-विद्वत्ता न रहे तो मैं कैसा होता हूँ, यह आप ने अभी देख ही लिया न? मैं स्वयं तो इस पांडित्य को प्राप्त न कर पाया, इस तांबे के कड़े से यह संभव हुआ । मैं समझता हूँ कि इस पांडित्य के कारण मुझ में सद्वर्तन भी आया । लेकिन विद्याधर ने यह साबित किया कि पांडित्य के साथ संस्कार नहीं मिलते, आदमी परिष्कृत नहीं होता । जब मैं विद्याधर के पास गया था, तब उसने अपनी विद्वत्ता को उठा कर ऐसे परे रखा था, जैसे अब मैं ने तांबे का कड़ा निकाल कर परे रखा था; और उसने मेरी विद्वत्ता की परीक्षा किए बिना मेरी उपेक्षा की, मेरा अपमान किया था । उस समय मैं ने जो दुख अनुभव किया था, उसे बताने के लिए ही मैं ने कड़ा उतार कर उसकी भर्त्सना की । आप की सूचना के अनुसार मैं हमेशा तांबे का कड़ा पहन कर रहूँ, तो यह उचित और उत्तम ही होगा । हर पंडित को चाहिए कि वह अपने पांडित्य के अनुसार ही व्यवहार करे । राग-द्वेष, अस्मिता-अहंकार आदि के चपेट में न आते हुए पंडित को अपने पांडित्य का आदर करना चाहिए । यही बताने के लिए मैं ने ऐसा किया । वरना विद्याधर ही क्यों, किसी के प्रति मेरे मन में राग-द्वेष नहीं है ।"

चतुर्मुख का उद्देश राजा, विद्याधर तथा अन्य दरबारियों की समझ में आ गया । उनके मन में चतुर्मुख के प्रति रहा आदरभाव और बढ़ गया । राजा चतुर्मुख से यों प्रभावित हुआ कि उसे तुरन्त अपना दरबारी पंडित बना दिया और उसका अच्छा सम्मान किया ।

११

[पूर्वकथा: वीरसिंह ने सेना का पुनर्गठन करने का निश्चय किया और अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी, कि वे जनता से अतिरिक्त कर के रूप में ज़बरदस्ती अनाज वसूल करें और उसके बदले में चन्द्रपुरी से हथियार ख़रीद लें । जनता ने इस पर विद्रोह किया । वसन्त के नेतृत्व में कुछ नौजवान जनता की हिफ़ाज़त के लिये वचनबद्ध हो गये । —इसके पश्चात्]

एक दिन दोपहर के वक़्त मुनि जयानन्द एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था । तब गोविन्द नामक एक शिष्य ने आकर उससे कहा, "गुरुदेव, एक नक़ाबपोश आदमी अक्सर हमारे आश्रम के आसपास चक्कर काटता नज़र आता है । झरने का पानी पीकर, गुफाओं की ओर ध्यान से देखते हुए, अपना वक्त गुज़ारते हुए उस नक़ाबपोश को कल शाम मैं ने तीसरी बार देखा है । पता नहीं किस उद्देश्य से वह यहाँ आता है? उस की हाल-चाल से तो कुछ पता नहीं चलता । उसके बारे में हमें ठीक ठीक सब जान लेना चाहिए । अगर उसके इरादे कुछ खराब हो तो आखिर हम को भुगतना पड़ेगा न?"

"हाँ, दूर से मैं ने भी देखा है उसे । मुझे तो लगता है, कि वह कोई महान् व्यक्ति होगा और किसी महत्त्व के कार्य से ही वह इस प्रकार

जयानन्द मुनि पीछे से उसके पास आया और उसने कहा, "सुस्वागतम्!"

नक़ाबपोश एकदम चौंककर पीछे मुड़ा और फिर संभलकर उसने मुनि को प्रणाम किया ।

"कुछ ढूँढ़ते हुए इस जंगल में अक्सर घूमते हुए मैं ने देखा है तुम्हें । मुझे बता दो किस बात की तलाश में हो तुम? शायद मैं भी कुछ सहायता कर सकूँ? हर गरज़मन्द की हम मदद करते हैं । मुझ से तुम को कुछ धोखा नहीं होगा इसे निश्चय समझ लो; अगर किसी मुसीबत में हो तो उसे भी साफ़-साफ़ कह दो । मैं भरसक तुम्हारी मदद करूँगा ।" मुनि ने मन्दहास करते हुए पूछा ।

"मैं ने सोचा था कि मेरा यहाँ का अस्तित्व कोई नहीं जानता । आश्चर्य है! आप को कैसे पता लग गया?" नक़ाबपोश ने पूछा ।

"तुम बिलकुल चिन्ता न करो कि तुम्हारे बारे में वीरसिंह के सिपाहियों को मालूम होगा । चूँ कि यहाँ कोई भी नया आदमी आसपास फटकता है, तो मुझे फ़ौरन पता चल जाता है ।" मुनि ने आश्वासन दिया ।

इस पर नक़ाबपोश ने मुनि को ज़रा ध्यान से देखा और कहा, "आप ही जयानन्द मुनि है न? मेरा नमस्कार स्वीकार कीजिये ।"

मुनि हँसता रहा । तब मुनि के पाँव भक्तिभाव से छूकर नक़ाबपोश ने कहा, "महात्मन्, आप के बारे में, मेरे मित्र जयपुरी के राजा शंकरवर्मा से मैं ने बहुत-कुछ सुन

यहाँ आता होगा । तुम उसे अगर फिर एक बार देख लो, तो मुझे ख़बर करना । मैं उससे बात करना चाहता हूँ । तुम्हारे मन में जैसा शक है वैसा मेरे मन में बिलकुल नहीं है । फिर भी उस से कुछ अधिक परिचय मैं पाना चाहूँगा अवश्य ।" जयानन्द ने कहा ।

कुछ दिन और बीत गये । एक दिन शाम के समय सन्दीप बड़े मज़े में शार्दूल-शावकों के साथ खेल रहा था । सन्दीप और शावक जब कुश्ती लड़ने लगे, तो उन्हें देखकर भल्लूकी भी खुशी से उछलने लगी । सन्दीप के मन में इन जानवरों के प्रति ज़रा भी भय न था । अपने मित्रों के समान वह उनके बीच विचर रहा था । नक़ाबपोश एक चट्टान के पीछे से यह दृश्य अविचल देखता रहा ।

लिया था। फिर भी, वीरसिंह के गुप्तचरों के बारे में आप को आगाह करने वाले कौन हैं यहाँ? मुझे तो ऐसा प्रबन्ध और सेवक यहाँ दिखाई नहीं देते?"

"आगाही करने के लिये मनुष्य ही चाहिये, यह कोई ज़रूरी नहीं है।" आश्चर्य से देखेनवाले नक़ाबपोश को मुनि ने हँसते हँसते कहा।

"इसका मतलब है, आप के पास ज़रूर कुछ अतीन्द्रिय शक्तियाँ हैं।" नक़ाबपोश ने उसी आश्चर्य से कहा।

"इतनी छोटी सी बात के लिए अतीन्द्रिय शक्तियों की क्या ज़रूरत है बेटा? ऐसी शक्तियों को प्राप्त करने के बदले यहीं हमारे साथ रहनेवाले कुछ अन्य प्राणियों के साथ दोस्ती करना ज़्यादा आसान है न?" मुनि ने पूछा।

मुनि की बातें सुनकर नक़ाबपोश बहुत ही खुश हुआ।

"महात्मन्, अभी मेरी समझ में आ गया कि बाघ व भालू से यह बच्चा कैसे खेल पा रहा है। इसे ज़रा भी डर नहीं है इन जानवरों से! सभी से कैसे हिल गया है! सभी जानवर इस के मानो दोस्त बन गये हैं। महानुभाव, यह बच्चा कौन है?" नक़ाबपोश ने पूछा।

"तुम्हारे सवाल का जवाब देने से पहले, मुझे यह जान लेना ज़रूरी है, कि असल में तुम कौन हो? ग़लत मत समझना। पर तुम को ठीक ठीक जाने बग़ैर मैं कैसे सत्य तुम पर खोल दूँ?" मुनि ने सहज भाव से कहा।

पल भर के लिये मौन रहकर अपने चेहरे से नक़ाब हटाते हुए उस वीर ने कहा, "महात्मन्, मैं आप पर विश्वास रखता हूँ।"

इस पर शान्तचित्त होकर मुनि ने कहा, "महाराज, यह तो तुम्हारा ही पुत्र है। मैं ने बहुत से समय पहले एक बार तुम्हें देखा था और युवराज के रूप ने भी तुम्हें पहचानने में सहायता दी।"

राजा शान्तिदेव को आश्चर्य हुआ। साथ साथ, उसकी आँखें भी नम हुईं।

"राजा, मैं जानता था कि यदि तुम ज़िन्दा हो, तो ज़रूर ही अपनी रानी और पुत्र को ढूँढ़ते हुए यहाँ आओगे। युवराज को मेरे हाथों सौंपकर रानी चल बसी। उसे यदि पता

होता कि तुम ज़िंदा हो, तो वह सन्तोष के साथ स्वर्ग सिधारती । मैं ने उसे समझाया कि भवितव्य का भार भगवान पर छोड़कर वह शान्ति से आँखें मूँद ले । उसने ऐसा ही किया राजन्! युवराज को मेरे हाथ सौंप कर बड़े दुख के साथ रानी ने प्राण छोड़े । वह दृश्य बड़ा ही दयनीय था । मेरे हृदय पर पूरी तरह अंकित है वह!" मुनि ने कहा ।

उफनते दुख को दबा लेने की कोशिश करते हुए राजा ने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

"उसके मृत शरीर को मैं ने दफना दिया ।" दूर पर दिखाई देने वाली एक चट्टान की ओर इशारा करते हुए मुनि ने कहा ।

उस चट्टान पर कुछ फूल दिखाई दिये ।

"युवराज हररोज़ अपनी माँ की समाधि पर फूल चढ़ा कर उसकी पूजा करता है । यह उसका एक दैनन्दिन कार्यक्रम रहा है ।" मुनि ने जानकारी दी ।

अब राजा अपना दुख दबाने में असफल हुआ । उस समाधिशिला के पास जाकर और उससे अपना सिर टिकाकर वह बालक की तरह फफक-फफककर रोने लगा । मुनि ने उस के पास जाकर उचित शब्दों में सान्त्वना दी ।

थोड़ी देर बाद कुछ स्वस्थ होकर राजा ने मुनि से पूछा, "महात्मन्, क्या मैं अपने पुत्र को देख लूँ?"

"सन्तोष के साथ देख लो । मुझे कोई एतराज नहीं है ।" मुनि ने कहा ।

राजा थोड़ी देर मौन रहा, फिर वह बोलने लगा, "मुझे लगता है कि आप के मन में कुछ अलग ही विचार हैं । आप जब तक मुझे पूरे मन से अनुमति नहीं देते, मैं अपने पुत्र से नहीं मिलूँगा ।"

"राजन्, फिलहाल युवराज प्रकृति की गोद में पल रहा है । और मेरे पास विद्या सीख रहा है । वह महान् तीक्ष्ण बुद्धिवाला और तेज़ है । तुम्हें देखते ही पहचान लेगा कि तुम ही उसके पिता हो । इसका परिणाम होगा कि उसे सारी बातें ज्ञात हो जायेंगी और वह अपने दिल में ज़रूर टीस महसूस करेगा कि अपना धर्मनिष्ठ पिता दुष्टों के षड्यन्त्र का शिकार हो चुका है । फिर उसके नन्हे से दिल में अभी से बदला लेने की चिनगारियाँ उठेंगी । इससे उसके प्रशान्त जीवन और विद्यार्जन में

खलल आ जाएगा । यही मेरी चिन्ता का विषय है ।" मुनि ने कहा ।

"हाँ, आप का कहना भी सच है महात्मन्! आप का विचार सौ फ़ी सदी सही है ।" राजा ने कबूल किया ।

"अभी न सही, मगर आगे चलकर युवराज को इस बात का पता चलेगा ज़रूर! तब यह अपनी इच्छा से कर्तव्य पूरा कर लेगा । वह समय अभी नहीं आया है । मेरे विचार से, इसके लिये हमें और कुछ समय तक इन्तज़ार करना चाहिये ।" मुनि ने अपनी सलाह दी ।

"हाँ, महात्मन्! आप का कहना मैं मानता हूँ । अपने पुत्र पर बन्धन बननेवाला प्यार बढ़ा लेना वाज़िब नहीं है ।" राजा ने कहा ।

"ऐसा क्यों?" मुनि ने आश्चर्य से पूछा

"क्यों कि, आप उसे आज जो विद्या दे रहे हैं, वह मैं तो न दे पाऊँगा । आप के पास जो बेहतर सुविधाएँ हैं, वे आज मेरे पास नहीं हैं । मेरी आज की हालत में मैं अपने बेटे की भलाई के लिये अपना कुछ समय भी नहीं लगा सकता । इस से भी कई गुना अधिक दायित्व आज मेरे कन्धों पर है ।" राजा ने कहा ।

"ऐसा गुरुवर कौनसा दायित्व है तुम पर?" मुनि ने पूछा ।

"महात्मन्, मैं जानता नहीं कि आप फिलहाल सुमेध राज्य की हालत के बारे में कितना जानते हैं! मुझे, रानी को और मेरे पुत्र तक को मार डालने का षड्यन्त्र बीरसिंह ने रचा था । उसे आज पता नहीं कि मैं जीवित भी हूँ या नहीं । मेरे बीबी-बच्चे के बारे में भी वह कुछ नहीं जानता है । वास्तव में मैं ही उसका पीछा करता रहा और इससे उसने अपने मन की शान्ति खो दी है । अशान्ति और भय के कारण वह अब अपना सन्तुलन खोकर क्रोध का ग़ुलाम बन चुका है । वह क्रोध अब वह अबोध और भोलीभाली प्रजा पर उतार रहा है, उन्हें रोज़ नयी नयी यातनाएँ दे रहा है । उसने अपने दलपतियों को अड़ोस-पड़ोस के राज्य लूटने का लालच दिखाया और मेरे मामाजी के राज्य अमृतपुरी पर चढ़ाई करने के लिये निकला था वह! सौभाग्य-वश उसी रात नदी में बाढ़ आयी और वीरसिंह के सिपाही और हथियार पानी में बह गये । अब फिर नयी सेना व हथियार

जुटाने के लिये वह अपनी जनता का अनाज तक लूटने पर आमादा हो गया । मैं उसके हर बुरे प्रयत्न को रोकने में कमर बाँधकर कार्यरत हो चुका हूँ ।" राजा शान्तिदेव ने सारा ब्यौरा कह सुनाया ।

सन्तोष से सिर हिलाते हुए मुनि ने उससे कहा, "राजन्! सुमेध राज्य की हर हालत के बारे में जानकारी रखता हूँ मैं । मैं ने यह भी सुना है कि कुछ नौजवान आगे बढ़कर वीरसिंह को नाकों दम कर रहे हैं । उन जवानों का अन्त करने की ताक में है वह । इतना दुष्ट और हीन बन गया है वीरसिंह, कि मौक़ा मिले तो उन सभी देशभक्त युवकों को मौतके घाट भी उतार देगा । उनके भाई-बंधु और रिश्तेदारों को भी वह छोडेगा नहीं । इसलिये उन नौजवानों को चाहिये कि वे अनुशासन और सही प्रणाली से चलते हुए हमेशा चौकन्ना रहें! हम पहले वीरसिंह को सावधान कर लें कि वह अपने तौर-तरीक़े सुधार ले और इसके लिये एक निश्चित मियाद भी उसे दे दें । उस समय में वह सुधर जाये तो ठीक, नहीं तो युद्ध अनिवार्य हो जाएगा । लेकिन यह युद्ध वीरसिंह की सेना और सुमेध राज्य के केवल इन साहसी नौजवानों के बीच ही लड़ा जाना चाहिये । अबोध आम जनता को युद्ध से कोई हानि नहीं पहुँचनी चाहिये । ज़रा सा भी कष्ट उन्हें न पहुँचे । तुम्हारा क्या विचार है?"

"हाँ महात्मन्! आप का कहना सही है ।" राजा ने कहा ।

"तब उन नौजवानों को एकत्रित कर के, सुमेध के सरहदी जंगलों में रहते हुए सही ढँग से युद्ध चलाने का दायित्व तुम्हें अपने ज़िम्मे लेना होगा!" मुनि ने सुझाया ।

"आप की आज्ञा मेरे लिये शिरोधार्य है । आप कहते हैं, ऐसा ही युद्ध लड़ा जाएगा । साधारण जनता की इस में कोई हानि न होगी । इस मामले में मेरे आप के विचार एक कदम मिलते हैं ।" राजा ने अपनी स्वीकृति मुनि पर ज़ाहिर की ।

(क्रमशः)

चुगलियाँ

भीमराज और रामराज कई सालों से अच्छे दोस्त थे । अचानक उन दोनों के बीच दुश्मनी पैदा हुई । वे एक दूसरे से द्वेष करने लगे ।

एक दिन गाँव के बाहर शिवजी के मंदिर के पास दोनों की मुलाक़ात हुई । तब भीमराज ने कहा–"देखो भाई राम, हम मानव हैं–बुद्धिमान प्राणी हैं । हर किसी की हर बात पर विश्वास करना ठीक नहीं है, कुछ आगे-पीछे भी सोचना चाहिए । असलियत पहचानने की क्षमता हमें रखनी चाहिए ।"

रामराज ने कहा–"भीम, आखिर तुम क्या कहना चाहते हो? तुम्हारी बातों का तात्पर्य मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता!"

"हाँ, वह कैसे समझ में आएगा? तुम्हारी बुराई चाहनेवाले कुछ कहें तो तुम समझ जाते हो । है न?" भीमराज ने पूछा ।

"अरे, यों ताना मत देना । मुझे साफ़-साफ़ कह दो कि आखिर बात क्या है ।" रामराज ने कहा ।

"मैं ने सुना उस राजेन्द्र की चुगलियाँ सुन कर तुम ने मुझ से दुश्मनी करना शुरू कर दिया । तुम ने तो उसे यह भी कहा था कि तुम मेरा अंत देख लोगे । तुम्हीं सोच लो, कोई चुगलखोर कुछ कह दे, तो उसे सच मानना कहाँ तक उचित है?" भीमराज ने कहा ।

इस पर रामराज ने कहा–"तुम ने कैसे जाना कि मैं ने तुम्हारे बारे में ऐसा कहा था?"

भीमराज ने कहा–"मुझे भूपेन्द्र ने ये सारी बातें बता दी थीं ।"

"अच्छा, तुम मुझ से कह रहे हो कि चुगलियाँ नहीं खानी चाहिए । फिर तुम ने जो किया वह सब क्या है भला?" रामराज ने पूछा, और वह ज़ोर से हँसने लगा ।

अब भीमराज को अपनी भूल महसूस हुई । वह भी ज़ोर से हँस पड़ा ।

–कमला श्रीवास्तव

स्वप्न सुन्दरी

ज़िद्दी विक्रम फिर पेड़ के पास गये, पेड़ की शाखा से लटकनेवाला-शव उन्होंने अपने कंधेपर डाल लिया और यथावत् मौन होकर वे श्मशान की ओर चल पड़े । चलते चलते उस शव में स्थित वेताल बोल उठा, "राजन्! इस आधी रात के वक्त आप इस भयानक स्थान पर किस विचार से संचार कर रहे हैं, इसका कारण मैं नहीं जानता; दुनिया में किसी पुरुष के लिए दो प्रधान आकर्षण होते हैं—कनक और कामिनी! इस लिए आप किसी गुप्त - धन के लिये, या किसी सौन्दर्यवती स्त्री के लिये इस प्रकार विचर रहे हैं, तो मैं आप को सचेत करना चाहता हूँ । कुछ लोग अथक परिश्रम करके भी अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकते । इसका कारण कुछ समझ में नहीं आता । हो सकता है, इसमें हरेक का अपना भाग्य भी है । कुछ लोगों की इच्छाएँ सफल होती हैं; फिर भी अविवेक और बुद्धिहीनता के कारण वे उनका

सदुपयोग कर नहीं पाते । यह भी एक प्रकार का देव-दुर्विलास हो सकता है! उदाहरण के तौर पर मैं आप को एक राजकुमार की कथा सुनाता हूँ । सावधान होकर सुनिये इसे; आप का श्रमपरिहार भी होगा ।" और बेताल कथा सुनाने लगा ।—

बात पुरानी है । मणिद्वीप राज्य पर राजा माणिकवर्मा का शासन था । राजा बड़ा कुशल शासक था । उसके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी । राज्य में सब दूर समृद्धि थी । किसी को किसी चीज का अभाव न था । माणिकवर्मा बड़ा न्यायप्रिय था और सब को एक आँख से देखता था । उसके एक ही पुत्र था जिसका नाम था सुधीर । सुधीर बड़ा होनहार युवक था । राजमहल में सभी उसका आदर करते थे । पिता के बहुतेरे गुण पुत्र में आये थे । माणिकवर्मा की ढलती उम्र में वह पैदा हुआ था, इसलिये जब उसकी उम्र बीस साल की हुई, तब तक राजा बूढ़ा हो चुका था । अब पुत्र का विवाह कराके राज्यभार उसे सौंपने की बात राजा माणिकवर्मा ने सोची । अनेक राजकुमारियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेने पर रत्नगिरी की राजकुमारी रत्नप्रभा की तस्वीर राजा ने सुधीर को दिखा दी और कहा, "बेटा, मैं अब बूढ़ा हो चुका हूँ । राजकाज़ का बोझ संभालना मेरे बस का नहीं रहा । यह बोझ अब तुम्हीं को संभालना है । बुढ़ापे की वजह से मैं बहुतेरी बातें भूल जाता हूँ । मैं चाहता हूँ कि अब सभी ज़िम्मेदारियों से निवृत्त हो जाऊँ और कुछ आध्यात्मिक मनन-चिंतन करूँ । एक सुपुत्र के नाते मेरी इस इच्छा की तृप्ति करना तुम्हारा कर्तव्य है । करोगे न अपने कर्तव्य का पालन?"

शादी का निर्णय दूसरे दिन बताने का आश्वासन देकर और तसवीर लेकर सुधीर अपने महल की ओर चल पड़ा ।

उसी रात सुधीर ने सपने में एक अद्भुत लावण्यवती युवती को देखा । ऐसा सौंदर्य इस के पहले उस ने कहीं न देखा था । सचमुच वह मूर्तिमंत सुंदरता थी । सुधीर इस सुंदरता से एकदम प्रभावित हो गया! उसका शरीर सुनहरे तेज से दमक रहा था । उसकी आँखें कमल की पंखुडियों की सी थीं । घने लंबे बाल और चंपाकली सी नाक वाली वह सुंदरी

सुधीर को ही निहार रही थी । कुछ ही देर में वह गायब हुई । जाते जाते उसने सुधीर की ओर लालचभरी निगाह से देखा । सुधीर के दिल पर उसकी छवि अंकित हो गई ।

सुधीर की नीन्द खुल गयी और शेष रातभर वह सो नहीं सका । उसके दिलो दिमाग पर उस खूबसूरत युवती का मोहक रूप ही छाया हुआ था । उसने सोचा कि वह सुन्दरी कहीं न कहीं ज़रूर होगी और विवाह करना है, तो सिर्फ़ उसी के साथ!

दूसरे दिन सुधीर ने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मैं कुछ दिनों के लिये अकेले ही अपने देश में संचार करके प्रजा के हाल-हवाल देखना चाहता हूँ । राजकाज संभालने से पहले यह अनुभव प्राप्त करना मैं ज़रूरी समझता हूँ । मैं समझता हूँ हर राजा को समय समय पर ऐसा भ्रमण आवश्यक है । जनता के सुख-दुखों को निकट से देखना चाहिए राजा को । कोई अधिकारी अगर प्रजा के साथ अन्याय कर रहा हो, तो इसकी जनकारी अनायास ऐसे भ्रमण में मिल जाती है । जब लौट आऊँगा, तब विवाह की बात सोचेंगे । अभी शादी की बात ज़रा मुल्वती रखना ही उचित लगता है । आप की क्या राय है? आप जो सलाह देंगे, वही मैं करना चाहूँगा । आपकी इच्छा के बाहर जाने की ज़रा भी ज़रूरत मैं नहीं समझता ।"

पुत्र की यह इच्छा पूरी करने का निर्णय लेकर राजा माणिकवर्मा ने उसे स्वीकृति दे दी । फिर साधारण नागरिक के वेष में सुधीर अपने घोड़े पर भ्रमण के लिये निकला और उस स्वप्न सुंदरी की तलाश करने लगा ।

तीन महीने अनेक शहर और गाँव ढूँढ़ने पर भी सुधीर उस सुन्दरी को ढूँढ़ न पाया । सरायों में आये सुदूर प्रान्तों के यात्रियों और सौदागरों से पूछकर भी उसने युवती का पता लगाने की कोशिश की, मगर असफल ही रहा ।

और दो महीनों के लिये वह सपने की रानी की तलाश में घूमता-भटकता रहा । शहर-शहर, गाँव-गाँव, घर-घर उसने छान मारे मगर वह स्वप्नसुन्दरी के दीदार हासिल नहीं कर सका । अब राजकुमार सुधीर ऊब गया, थक गया । अथक यात्रा और अकाल भोजन के कारण राजकुमार की

सेहत बिगड़ गयी । उसका पूरा रूप ही बदल गया ।

एक दिन दोपकर के समय सुधीर एक नदी के किनारे पहुँचा । घोड़े को घास चरने छोड़कर वह एक पेड़ तले आराम करने बैठ गया । खूब थका हुआ था वह । नदी से आनेवाली हवा ठंड़ी और सुखद थी । सुधीर वहीं लुढ़ककर सो गया । जब उसकी नीन्द खुली, तब दिन ढल चुका था ।

घोड़ा कहीं दिखायी नहीं दिया । उसे ढूँढ़ते हुए सुधीर नदी किनारे चल पड़ा । एक जगह किनारे पर नदी में बंसी डाले बैठी एक युवती उसे दिखाई दी ।

सुधीर ने उससे पूछा, "इस तरफ़ किसी घोड़े को जाते हुए देखा तुम ने? घोड़े को चरने के लिए छोड़ कर मैं सो गया था, जाग कर देखा कि घोड़ा नदारद!"

इस अचानक सवाल पर चौंककर उस युवती ने पीछे मुड़ कर देखा । आश्चर्य! वही थी राजकुमार सुधीर की स्वप्नसुन्दरी! मुद्दतों जिस की तलाश थी उसे यों पाकर चकित हो गया । उसे देख सुधीर बहुत खुश हुआ ।

"ओह! मेरी तलाश कामयाब हुई! मैंने ने सपने में देखी हुई सुन्दरी तुम ही हो । तुम्हारे लिये बहुत दिनों से मैं देश भर घूम रहा हूँ । धूप और बारिश में तपते-भीगते मैं ने कई तकलीफ़ें उठायीं, और आख़िर तुम्हें ढूँढ़ ही निकाला । मेरी पिछले कुछ महीनों की साधना में आखिरकार में सफल हुआ । मेरे साथ चलो; मैं शादी करूँगा तुम से ।" सुधीर ने जोश में आकर कहा ।

उसकी ये बहकी सी बातें सुनते ही बंसी वहीं छोड़ कर वह युवती पास ही की झोंपड़ी की ओर भागी-बेतहाशा! सुधीर भी उसके पीछे भागा ।

सुधीर झोंपड़ी के पास पहुँचा और तब तक एक बूढ़ा अन्दर से बाहर निकला! उसने सुधीर को सिर से एड़ी तक निहारा और और तीखी आवाज़ में पूछा, "कौन हो तुम? किस गाँव से आये हो? तुम्हारे माँ-बाप कौन है? तुम ने मेरी बेटी से कहा कि, सपने में तुम दिखाई पड़ी थी, मुझ से शादी करो । क्या यह शराफ़त है? पहले अपना नाम बोलो, मेरे सवालों जवाब दो ।"

बूढ़े के इतने सवाल करने ही सुधीर सम्भ

रह गया । फिर होश में आकर रूँधे स्वर में उसने कहा, "बाबा, आप के सारे सवालों का मैं एक ही जवाब दे सकता हूँ । –"मैं एक बेवकूफ हूँ ।" इतना कह कर सुधीर वापस राजधानी के लिये चल पड़ा । राजमहल पहुँच कर उसने रत्नप्रभा से शादी की । अनेक सालों तक राजी-खुशी से वह राज करता रहा और जनता की खूब सेवा कर लोकप्रिय राजा कहलाया ।

कहानी ख़तम करके बेताल ने विक्रम से पूछा, "राजन्, सुधीर ने अनेक तकलीफें उठायीं और स्वप्नसुन्दरी को ढूँढ निकाला । फिर भी उसने उस बूढ़े से क्यों कहा, कि वह एक बेवकूफ है? हाथ आये मौक़े को उसने यूँ छोड़ क्यों दिया? क्या सचमुच ही वह बेवकूफ है? सही जवाब जान कर भी न दोगे, तो तुम्हारा मस्तक फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा ।"

इसपर राजा विक्रम बोले, "सुधीर न मूर्ख है, न बुद्धिहीन! वैसे वह विवेकी व बुद्धिमान् भी नहीं है । सपने में देखी सुन्दर युवती को इस प्रकार चारों ओर ढूँढ़ते फिरना भी विवेकशील आदमी का काम नहीं है । बूढ़े के सवालों को सुनने पर ही सुधीर सच्चाई को समझ पाया । एक मामूली सा आदमी अपनी बेटी के साथ शादी करने आये हुए नौजवान के बारे में जानने के लिये इतने सारे सवाल पूछता है । उल्टे खुद राजकुमार होते हुए रानी बननेवाली युवती की योग्यता के बारे में सोचना क्या उसका अपना दायित्व नहीं है?

स्वप्नसुंदरी चाहे कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह रानी बनने योग्य है कि नहीं यह अवश्य देखना चाहिए । सुंदरी कन्या सुगुणवती न हो ऐसा भी हो सकता है । उसके गुण-शील की परीक्षा किये बगैर उससे विवाह करना मूर्खता होगी । अपनी यह मूर्खता उसे तभी मालूम पड़ी । इसी लिये स्वप्नसुन्दरी के पिता से अपने बारे में कुछ भी न कह कर वह चुपचाप लौट गया; और बुद्धिमानी से अपना कर्तव्य निभाया ।"

इस प्रकार राजा का मौन-भंग होते ही बेताल फिर शव समेत अदृश्य होकर उसी पेड़ पर जाकर शाखा से लटकने लगा । (कल्पित)

कंकण की भेंट

मलयावती नगर में यात्रियोंकी सुविधा के लिए एक बड़ी सराय थी । राजधानी में आनेवाले यात्रियों से सराय हमेशा खचाखच भरी रहती थी ।

उस ठसाठस भरी सराय में किसी दूर के गाँव से वीरबाहु नाम का एक आदमी आकर ठहरा । उस के सोने के कंकण की वहाँ चोरी हुई । वीरबाहु सोचने लगा कि इस हालत में क्या किया जाय । अपने कंकण कैसे वापस प्राप्त किये जा सकते हैं? अगर कुछ शिकायत करनी हो, तो किसके पास करें? इस पर वीरबाहु ने सराय के मालिक के पास शिकायत की ।

सराय के मालिक ने वीरबाहु का कमरा देखा वहाँ ज़रूरी चीज़ें लानेवाले नौकर टोलाराम को तुरन्त बुलवाया और अमीर वीरबाहु के ककण के बारे में पूछा । क्यों कि बहुत संभव था कि टोलाराम ने ही यह चोरी की हो । और कोई वीरबाहु के कमरे में जा ही न सकता था ।

आश्चर्य के साथ टोलाराम ने कहा–"मालिक, उस कंकण के बारे में मैं ज़रा भी नहीं जानता । कमरे की सफाई के लिए मैं वीरबाहु के कमरे में गया था अवश्य । पर मैंने अपना काम किया और मैं बाहर चला आया । कंकण के बारे में मैं कुछ नहीं जानता ।" टोलाराम के कपडे और उस के कमरे की तलाशी ली गई । कोई फायदा नहीं हुआ । सराय के मालिक ने लाचार हो कर सिपाहियों को बुलाया और टोलाराम को गिरफ्तार करने के लिए कहा । सिपाही टोलाराम को हिरासत में ले गये । फिर सुनवाई के लिए टोलाराम को राजा के सामने पेश किया गया ।

सिपाहियों द्वारा सब बात जान कर राजा थोडी देर मौन हो सोचता रहा । ऐसे मामलो

प्रमिला द्विवेदी

में अपराधी ही जानता है कि वह स्वयं दोषी है या नहीं । धनी यात्री के कमरे में टोलाराम को छोड़ कर दूसरा कोई तो नहीं गया था । इस लिए टोलाराम का ही चोर होना संभव है, अन्यथा धनी आदमी झूठ बोलता होगा । उसे झूठ बोलने की क्या ज़रूरत है? सचमुच ही चोरी हुई होगी, तभी तो मामला यहाँ तक पहुँच गया है ।

इस तरह सोचते हुए राजा के मन में एक शक हुआ । किसी काम के लिए राजधानी आए एक धनी को टोलाराम के खिलाफ़ शिकायत करने की क्या ज़रूरत है? हो सकता है टोलाराम ही सचमुच चोर होगा । यहाँ कुछ सबूत नहीं है, इस लिए बुद्धिमानी से टोलाराम से ही सत्य उगलवाना ठीक होगा ।

फिर राजा ने टोलाराम से पूछा—"अरे, चमचम चमकनेवाले सोने के कंकण देखते ही तुम्हारे मन में लालच पैदा हुआ और तुम्हारी नीयत बिगड़ गई! कंकण तुम्हीं ने चुरा लिये है । है न? मैं दस मिनट का वक़्त दे रहा हूँ, तब तक अपना अपराध स्वीकार कर लो । तुम्हें माफ़ करके मैं छोड़ दूँगा । वरना कड़ी से कड़ी सज़ा भोगनी पड़ेगी । ईमानदारी से अपना गुनाह कबूल कर लो ।"

टोलाराम ज़रा भी घबराया नहीं, पूरी शांति के साथ उसने कहा—"मैं कंकण के बारे में सचमुच कुछ नहीं जानता ।"

इस पर राजा ने दरबारी विदूषक चारुहास की तरफ देखा । चारुहास अपनी वाक्-चातुरी से टोलाराम द्वारा कहलवाए कि

चोरी उसी ने की है । राजा का यह उद्देश चारुहास समझ गया ।

गंभीरता के साथ टोलाराम के पास जाते हुए चारुहास ने पूछा—"वह धनी आदमी नगर में कब आया?"

"तीन दिन पहले, मालिक!" टोलाराम ने कहा ।

"उस का स्वर्ण-कंकण कैसा था?" चारुहास ने पूछा ।

टोलाराम ने जवाब दिया—"उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता ।"

थोड़ी देर सोच कर चारुहास ने कहा—"वीरबाहु के कमरे में तुम्हें छोड़ कर सराय का कोई और नौकर तो जाएगा नहीं । सही है न?"

"हाँ सरकार!" टोलाराम ने कहा ।

"अच्छा यह बताओ कि वह धनी कंकण हमेशा हाथ में पहने रखता था, या कभी कहीं उतार कर रखता था?" चारुहास ने पूछा ।

फौरन टोलाराम ने कहा–"हुज़ूर, माफ़ कीजिए । मैं ज़रा भी नहीं जानता कि कंकण कैसा था ।"

चारुहास ने अनेक प्रकार से सवाल किये । मगर कोई फायदा नहीं हुआ । आखिर उसने राजा से कहा–"प्रभु, यह नौकर बेगुनाह है । जो चोरी करेगा, उस के मन में कहीं न कहीं थोड़ी घबराहट ज़रूर होती है । और उस घबराहट में वह पकड़ा जाता है । टोलाराम में ऐसी घबराहट बिलकुल नहीं दिखाई देती । इस लिए यह बेक़सूर है ।"

विदूषक की बातों पर मुस्कुराते हुए राजा ने कहा–"यह तो बड़ा अभिनेता भी हो सकता है न? अपना अपराध छिपाने के लिए ख़ासा अच्छा अभिनय करता होगा!"

"हाँ प्रभु, मुट्ठी भर नमक मुँह में डाल कर चबाते हुए ऐसा अभिनय करना कि गुड़ खा रहा हो-यह कोई मामूली बात तो नहीं है!अनेक संमानों के योग्य है यह । ऐसे महान अभिनेता का हमारे दरबार में रहना, हमारे लिए गर्व की बात होगी, एक अच्छा सोने का कंकण बनवा कर मैं आप ही के द्वारा उसे दिलवाना चाहूँगा ।" विदूषक ने कहा ।

अब टोलाराम ने हाथ जोड़ कर राजा से कहा–"प्रभु, मुझे माफ कीजिए । उस धनी का कंकण मैं ने ही चुराया है । मैं अगर मन में कोई निर्णय करता हूँ, तो उसे कोई बदल नहीं सकता । इसी लिए आप मेरा अपराध मेरे मुँह से नहीं निकाल सके ।"

इस पर चारुहास ने तालियाँ बजाते हुए कहा–"प्रभु, अब सब पोल खुल गई न? यह नौकर बड़ा ही ख़तरनाक है । शहद-पोती छुरी के समान है यह! ऐसे भयानक और ख़तरनाक आदमी को आज़ादी से घूमने देना समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होगा । इसे आजीवन कारागृह की सज़ा दिलवाइए प्रभु!"

चारुहास की बुद्धिमानी और चालाकी पर राजा बहुत खुश हुआ । टोलाराम को उम्र-क़ैद की सज़ा सुनाई और चारुहास की अक्लमंदी की खुले दिल से प्रशंसा की ।

चन्दामामा परिशिष्ट-२१

ज्ञान का ख़ज़ाना

वह कौन था?

तिरुचिरापल्ली के राजा विजयरंग चोक्कलिंगम के मन में, नगर के मन्दिर के पास रहनेवाले एक साधु के प्रति विशेष श्रद्धा व भक्ति थी। राजा ने एक बार सोचा कि साधु को उसके उपयोग की कोई क़ीमती चीज़ भेंट में दे दूं।

नगर का कोई सौदागर व्यापार के लिये कश्मीर जा रहा था। निकलने से पहले जब वह सौदागर राजा से मिलने आया, तब राजा ने उससे कहा, कि लौटते वक़्त वह कश्मीर से एक क़ीमती शाल अपने साथ ले आये। सौदागर ने अच्छी कारीगरीवाली शाल कश्मीर से लाकर राजा के हाथ सौंप दी। साधु को दरबार में बुलवाकर राजा ने वह क़ीमती शाल उसे भेंट की।

दूसरे दिन एक राजकर्मचारी ने राजा से कहा, "महाराज, वह साधु तो बड़ा घमंड़ी लगता है। आप ने उसे जो शाल दी, वह उसने एक भिखारिन को दे दी।"

इसपर साधु को बुलवाकर राजा ने शाल के बारे में पूछा, तो साधु ने कहा, "मैं ने एक दिव्य माता को शाल समर्पित की!"

इस उत्तर पर पल भर के लिये राजा को आश्चर्य हुआ। मगर तुरन्त उसकी समझ में आया, कि साधु हर प्राणी में भगवान देखने वाला महान् ज्ञानी है। यह साधु कौन था?

(पृष्ठ ३६ देखिये)

क्या आप जानते हैं?

१. हम जिस पर रहते हैं, वह पृथ्वी कब बनी?
२. धरती पर प्राणियों का सृजन कब हुआ?
३. 'विश्व' के माने क्या है?
४. अंगारक ग्रह पर पहुँचा अन्तरिक्षयान कौनसा? वह कब वहाँ पहुँचा था?
५. अपने गन्तव्यस्थान को पहुँचने में उसे कितना वक़्त लगा?
६. उसका यह सफर कितनी दूरी का रहा?

(पृष्ठ ३६ देखिये)

अंगराज्य

अंग राज्य का नाम लेते ही, महाभारत के दानवीर कर्ण की याद आती है। दुर्योधन ने उसे अंग राज्य का राजा बनाया था। फिर भी, कर्ण ने जीवन का अधिक समय हस्तिनापुर में ही बिताया और कुरुक्षेत्र के युद्ध में वीरगति पायी।

आज के बिहार राज्य का पूर्वी प्रान्त ही पुराने ज़माने में अंग राज्य कहलाता था। वह एक संपन्न राज्य था। सुख-समृद्धि से भरपूर इस राज्य में प्रजा संतुष्ट थी। कहीं भी नाम के लिए अशांति न थी। सभी नागरिक अपने जीवन को उन्नत बनाने में प्रयत्नशील थे। वह एक आदर्श राज्य था। बाद में यह राज्य मगध राज्य में विलीन हो गया। अंग राज्य की राजधानी चंपानगर थी। वह एक बड़ा ही सुन्दर नगर था। राजगिरि पर्वतों के पश्चिम में चंपा व गंगा नदियों के संगम स्थान पर यह चंपानगर बसा हुआ था।

ईसा की दूसरी सदी में भारत से 'अन्नम' (आज का व्हिएतनाम) को जो हिन्दू यात्री, प्रवासी बनकर चले गये, उन्हों ने इस राज्य की स्थापना की ओर अपनी नयी राजधानी का नाम उन्होंने 'चंपा' रखा। 'चंपा' नाम तब से मशहूर था।

हालांकि अंगराज्य बिहार का एक हिस्सा रह चुका था, वक़्त के गुज़रते गुज़रते उसका नामोनिशान तक अतीत के गर्भ में लुप्त हो गया। आज बिहार के भागलपुर के आसपास के 'चंपानगर' और 'चंपापुर' नामक दो गाँव, चंपानगर की याद दिलाते हैं।

भागलपुर जानेवाले यात्री कोलगांग के पास स्थित शिलामंदिर और गुफाओं को देखने

चंपा नगर

'में दिलचस्पी दिखाते हैं। भागलपुर के आसपास कुछ और यात्रा-स्थल भी हैं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि सुप्रसिद्ध चंपानगर को आज लोग पूरी तरह भूल गये हैं।

चन्दामामा की खबरें

अनुकरण भी एक हुनर है!

आप सब जानते ही हैं, कि महान् चित्रकारों के चित्रों को अच्छा ख़ासा मूल्य मिलता है। इसलिये ऐसे प्रसिद्ध चित्रों का सही अनुकरण कर के कुछ चित्रकार नकली चित्र बनाते हैं। कभी कभी ये नकली चित्र भी बिलकुल असली चित्र जैसे दिखाई देते हैं।

सदियों से बने ऐसे नकली चित्रों को इकट्ठा करके लंदन के ब्रिटिश म्यूज़ियम के एक विभाग में शाश्वत-प्रदर्शन के रूप में रखने का प्रबन्ध हो रहा है। हालांकि, प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्रों की हूबहू नकल करके ही बनाये गये ये चित्र हैं; फिरभी इन को बनाने वाले भी आखिर कुशल चित्रकार ही हैं न?

कुछ सवाल साहित्य के

१. एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी उपन्यासकार की किताब में भारत की कुछ प्राचीन कथाएँ भी जगह पा चुकी थीं । वह उपन्यासकार कौन?

२. उसका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ कौनसा है?

३. स्कॉटलंड का कौन उपन्यासकार भारतीय पाठकों को सुपरिचित है?

४. उसका लिखा प्रसिद्ध उपन्यास कौनसा है?

५. विश्वभर की अति प्राचीन भाषा कौनसी है?

उत्तर

वह कौन था?

तायुमानवर

सामान्य ज्ञान

१. लगभग ई.पू. ४६० करोड़ साल पहले ।

२. ई.पू. २०० करोड वर्ष पहले ।

३. सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणु से लेकर बड़े से बड़े नक्षत्र-मंडल भी जिसमें समा जाए, वही ।

४. वाईकिंग; १९७६ में ।

५. एक साल से ज़्यादा वक़्त ।

६. २० करोड़ कि.मी. ।

साहित्य

१. जफ्री चॉसर (१३४०-१४००) ।

२. दि कांटरबरी टेल्स ।

३. सर वाल्टर स्काट (१७७२-१८३२) ।

४. आईवानहो ।

५. संस्कृत ।
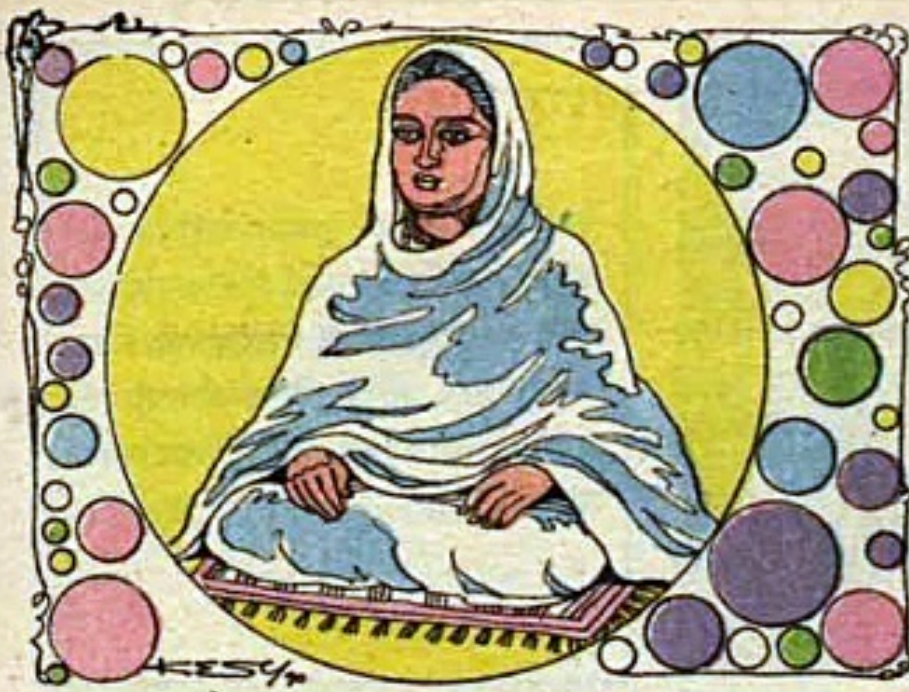
श्रीरामकृष्ण परमहंस

(२)

कलकत्ता के दक्षिणी क्षेत्र जामबाज़ार में एक दयालु स्त्री रहती थी । उस का नाम था रानी रासमनी । वह दौलतमन्द थी, साथ साथ भगतिन भी । विधवा रानी रासमनी के मन में एक बार काशी क्षेत्र के दर्शन करने की इच्छा हुई ।

वह एक बड़ी नाव में बैठ कर काशी के लिए निकली । उसके पीछे छोटी नावों में उस का परिवार था । एक दिन की यात्रा कर के शाम को सभी दक्षिणेश्वर पहुँचे ।
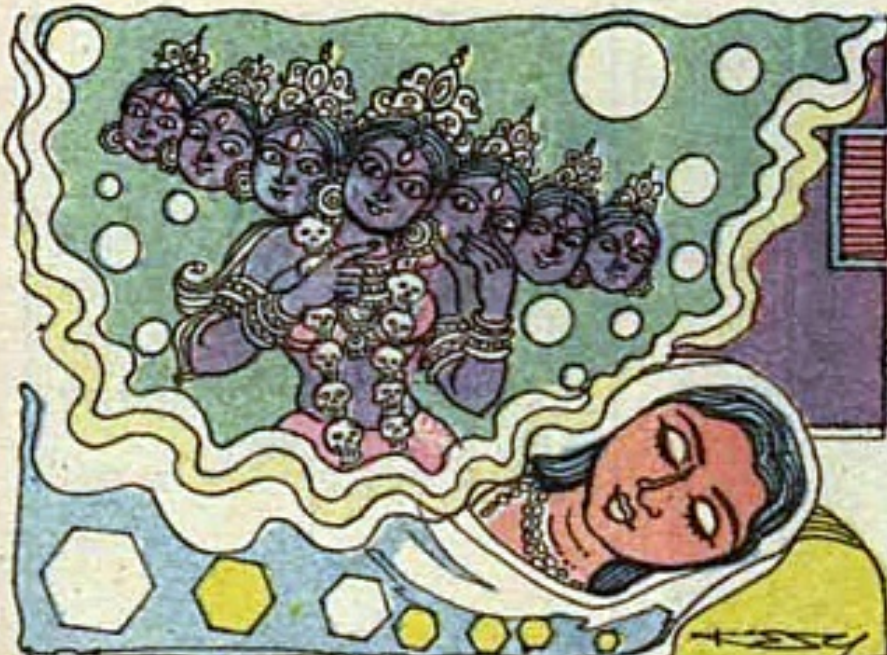
उस रात को रानी ने एक सपना देखा । सपने में जगन्माता ने दर्शन दे कर रानी से कहा-"तुझ जैसी भगतिन को काशी जाने की क्या ज़रूरत है? मेरे लिए यहीं एक मंदिर क्यों नहीं बनवा लेती?" दूसरे दिन सुबह रानी ने आसपास के सुंदर प्रान्त को घूम कर देखा और फिर अपनी काशी यात्रा स्थगित कर दी ।
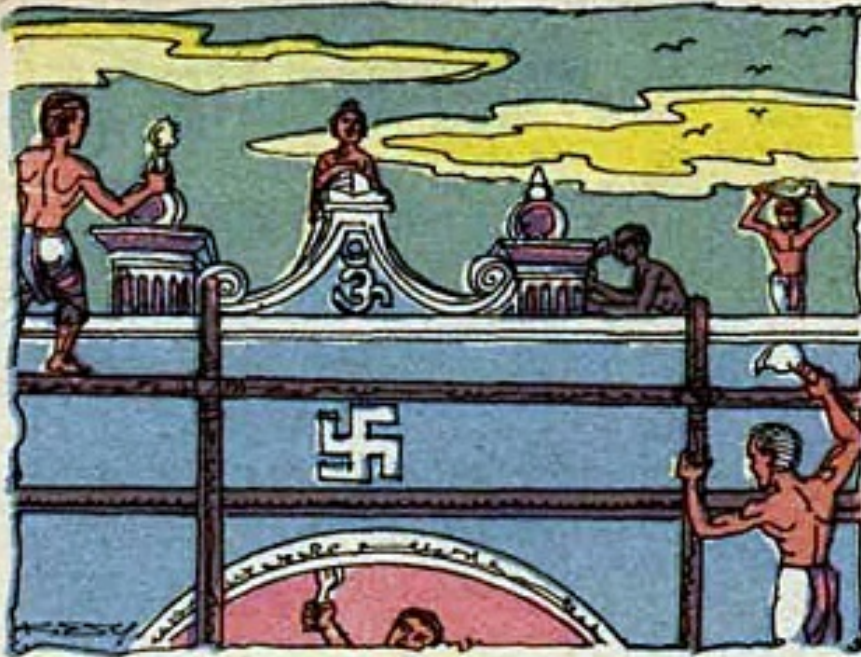
रानी ने वहाँ की ज़मीन खरीदी, और मंदिर-निर्माण का कार्य शुरू करवाया। रानी कालीमाता की भक्तिन थी। इस लिए उसने मंदिर में कालीमाता को प्रधान-देवी के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहा।

एक दिन रानी के सेवक गदाधर के बड़े भाई रामकुमार के पास गये। उन्होंने रामकुमार को रानी का संदेश पहुँचाया – "मैं चाहती हूँ, दक्षिणेश्वर के मंदिर में कालीमाता की मूर्ति को प्रतिष्ठित करना और मंदिर के पुजारी बनने का दायित्व स्वीकारना आप कबूल करें।"

रामकुमार ने सहर्ष स्वीकृति दी। आगम शास्त्र के अनुसार मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठित हुई। भारत के कोने कोने से श्रेष्ठ पंडित और ब्राह्मण उस उत्सव में संमिलित होने के लिए आ उपस्थित हुए।

बड़े भाई के साथ गदाधर भी वहाँ गया, उसे वह स्थान बेहद पसंद आया । शांत बहनेवाली गंगा नदी ने उस में उत्तेजना भर दी । प्रशांत नदी के किनारे और समीप के जंगल में गदाधर अक्सर ध्यान करते हुए समय बिताने लगा ।

रानी रासमनी के बेटे नहीं थे । उसका दामाद मधुरानाथ विवेकी और सुशिक्षित था । उस ने जब गदाधर को देखा, तब उसे लगा कि इस लड़के में कोई महान् विशेषता है ।

मधुरानाथ ने गदाधर से कहा कि वह अपने बड़े भाई की मंदिर की पूजा में सहायता करता रहे । गदाधर ने बड़े संतोष के साथ यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । लेकिन वह कभी कभी विधिवत् पूजा की बात भूल जाता, घंटों देवी की मूर्ति के सामने बैठे ध्यान में लीन हो जाता ।
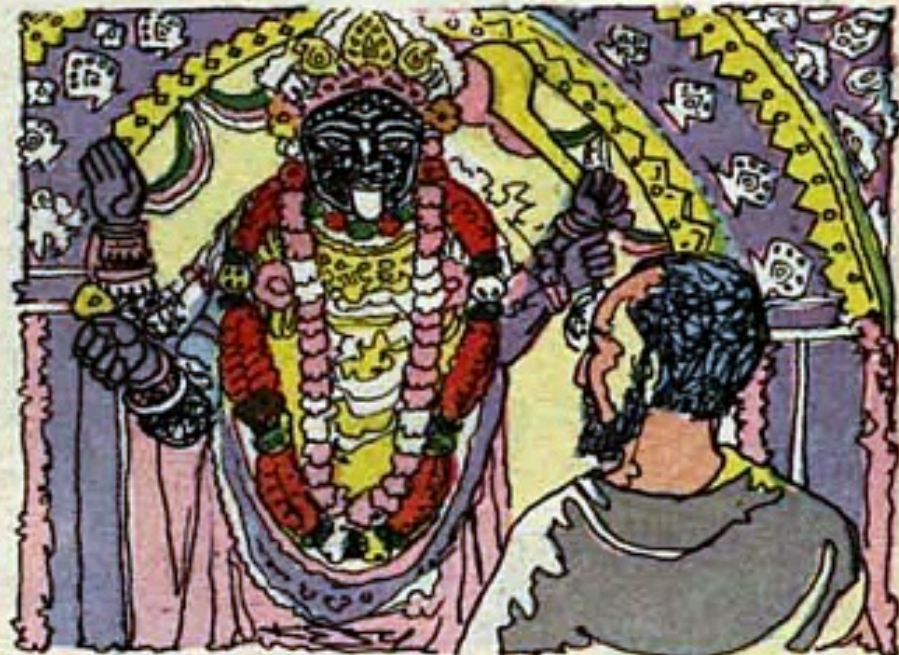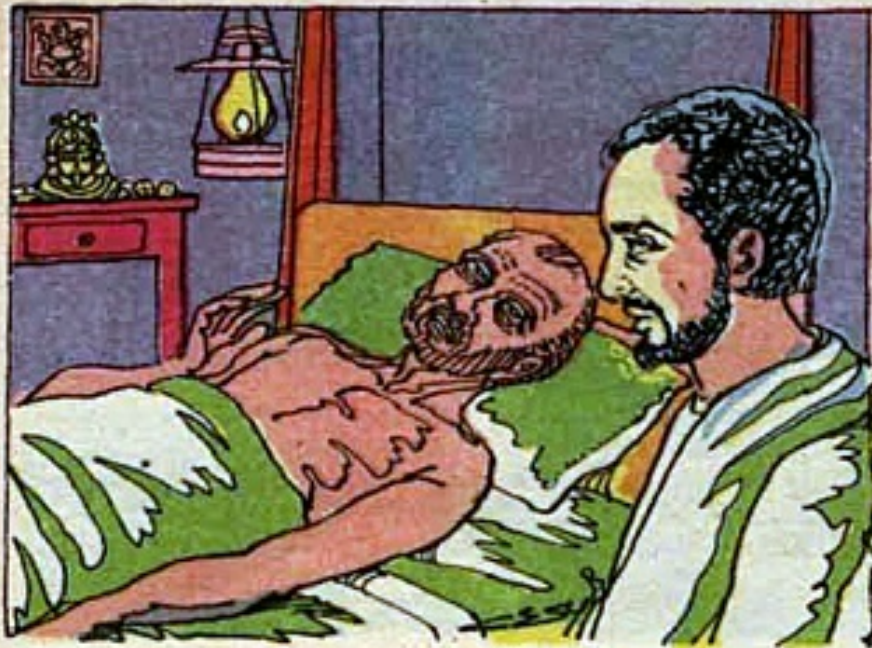
कुछ साल बाद रामकुमार बीमार पड़ा और उस का देहावसान हो गया । इस के बाद गदाधर उस काली मंदिर का प्रधान पुजारी बना । फिर भी वह अपने मनमाने ढंग से पूजा का कार्यक्रम संपन्न करता रहा ।

गदाधर की पूजा-विधि से कुछ ब्राह्मण असंतुष्ट हुए और उन्हों ने मधुरानाथ के पास इस के बारे में शिकायत की । मधुरानाथ जानता था कि मंदिर की मूर्ति में दिव्य शक्ति भरने की ताक़त केवल गदाधर में ही है । इस लिए इस शिकायत पर उसने ध्यान नहीं दिया ।

कुछ दिन श्रद्धा-भक्ति के साथ काली माता की पूजा करने के बाद गदाधर के मन में इच्छा हुई कि एक बार काली माता के प्रत्यक्ष दर्शन कर ले । एक दिन एकाग्रता से उस ने काली माता से प्रार्थना की – "माँ, अब तुम दर्शन नहीं दोगी, तो मैं अपना सर काट कर तुम्हारे चरणों पर समर्पित करूँगा ।" उस की आँखों से आँसू सी धारा बह निकली । अचानक बिजली की चमक-सी काली माता मूर्ति के सामने प्रत्यक्ष हुई । (क्रमशः)

दो चोर

भवानीपुर पर राजा चित्रसेन का शासन था । उन दिनों उस राज्य में रूपम नाम का एक चोर रहता था । वह बड़ा ही कुशल चोर था । आज तक बहुतेरी चोरियाँ करने पर भी वह अभी तक कभी पकड़ा नहीं गया था । उसके सभी सहायक उसे गुरु मानते, और रोज़ उस से चौर्य कर्म के कुछ गुर सीखते । राजधानी में अनेक घरों को वह लूट चुका था और पहरेदारों को नज़र में पड़े बिना बचकर घूम-भटक रहा था ।

एक बार रूपम ने एक राजकर्मचारी के घर में सेंध लगाई । वहाँ रूपम को कई मूल्यवान चीज़ें मिली । रूपम और उस के साथियों को देख कर वह राजकर्मचारी खूब डर गया था, जान बचाने के लिए उस ने सारी चीज़ें चोरों को दीं । एक मामूली राजकर्मचारी के घर इतनी मूल्यवती चीज़ें पाकर रूपम को बड़ा आश्चर्य हुआ । रूपम खुशी खुशी वहाँ से चल दिया ।

इस के ठीक एक सप्ताह बाद रूपम ने एक सौदागर के घर में सेंध लगाई, चाकू से सौदागर को डराया । रूपम को लगा था कि सौदागर के घर में खूब धन मिलेगा । पर उनका अपेक्षा-भंग हुआ । सौदागर की तिजोरी लगभग खाली थी । उस घर में जो चीज़ें मिलीं, उन्हें बटोर कर गठरी बाँध ली और चल दिया । पर इतनी कम लूट पा कर आज उसे बड़ी निराशा हुई ।

फिर रूपम ने एक किसान के घर में चोरी की । वहाँ उसे क़ीमती गहने मिले । उसे उम्मीद न थी एक साधारण किसान के पास इतना सोना हो सकता है । सभी गहने-ज़ेवरात को गठरी में बाँध कर रूपम साथियों के साथ उड़न-छू हुआ ।

और थोड़े दिन बाद रूपम ने एक पुजारी के घर में सेंध लगाई । वहाँ उसे क़ीमती चीज़ें

राजेश कुमार

दो महीनों बाद रूपम ने उसी राज-कर्मचारी के घर में दुबारा चोरी की। इस बार पहले से भी अधिक क़ीमती चीज़ें उसे वहाँ मिलीं। फिर सौदागर, किसान और पुजारी के घरों में भी वह चोरी के इरादे से गया। वहाँ उसे कोई ख़ास चीज़ें नहीं मिलीं। रूपम समझ गया कि अपनी चोरी के आघात से तीनों अभी तक सँभल नहीं पाये हैं।

इस बार भी, सिर्फ़ राजकर्मचारी को छोड़ कर बाक़ी तीनों ने चोरी के बारे में राजा के पास अपनी फ़रियाद पेश की। इस बार भी राज-कर्मचारी के चुप रहने पर रूपम चकित हुआ। उसके मन में दुबारा संदेह हुआ कि दाल में कुछ काला है ज़रूर!

एक बार एक अमीर का घर लूटते हुए रूपम पकड़ा गया, उसके सभी साथी बच निकले। अमीर ने रूपम से पूछ कर जान लिया कि उसके नौकरों ने जिस काले चोर को पकड़ा है वही कुख्यात रूपम है। उसने अपने नौकरों से कहा—"देखो, राजा के सिपाही भी जिसे पकड़ न सके उसे तुम लोगों ने आसानी से पकड़ लिया है। वास्तव में राजा के सिपाही इसे पकड़ने की बहुत दिन कोशिश कर रहे हैं। पर यह ऐसा कुशल और होशियार चोर है कि अब तक किसी के हाथ नहीं लगा। अब तुम इसे राजा के सिपाहियों के हाथ सौंप दो। इस के अपराधों के बारे में राजा खुद ही पूछताछ करेंगे और उसे वाज़िब सज़ा देंगे।

बहुत ज्यादा नहीं मिलीं। पर जो मिलीं उन्हें रूपम ने छोड़ा नहीं। गठरी बाँध कर साथियों के हाथ थमा दी और वह वहाँ से चल दिया।

रूपम ने एक बार सभी माल बारीकी से देखा तो पता चला कि राज-कर्मचारी के घर में मिली चीज़ें ही सब से अधिक क़ीमती है। वह फिर सोचने लगा कि एक साधारण राज-कर्मचारी के घर में ये सब चीज़ें कहाँ से आईं। इसके पीछे ज़रूर कोई रहस्य है।

एक और आश्चर्यजनक बात रूपम के ध्यान में आई। अपने घरों में हुई चोरियों के बारे में सब ने राजा के पास शिकायत की; सिर्फ़ राज-कर्मचारी ने कोई फ़रियाद न की। रूपम की समझ में नहीं आया कि केवल राज-कर्मचारी ही क्यों चुप रहा।

अमीर के नौकरों ने रूपम को शाही सिपाहियों के हाथ सौंप दिया । सिपाहियों ने उसे राजा के सामने पेश किया । राजा ने रूपम से कई सवाल पूछे और कहा—"कोई चोर कितना भी होशियार क्यों न हो, एक न एक दिन ज़रूर पकड़ा जाता है । तुम्हारे बारे में यह बात सच साबित हुई । तुम्हें पकड़ने की हम बहुत दिन कोशिश कर रहे थे । तुम्हें पकड़ने में मेरे सिपाही अब तक कभी कामयाब नहीं हुए । अच्छा हुआ कि तुम पकड़े गये । बोलो, चोरी का सब माल ला कर पेश करोगे, या जनम भर की क़ैद भोगोगे? अगर कोई भी चीज़ तुम ने अपने पास रखी, तो लेने के देने पड़ेंगे । समझे?"

"महाराज, एक बार पकड़े जाने पर अब अकड़ने से क्या लाभ? जो कुछ मैं ने चुराया है, सभी आप के हवाले कर देता हूँ ।" रूपम ने कहा ।

रूपम ने स्वयं बता दिया कि चोरी का सब माल उसने कहाँ छिपा रखा है । सिपाही वहाँ गये और सब चीज़ों को ले आये । सौदागर, किसान और पुजारी को पता चला कि चोर पकड़ा गया है और लूट का माल मिल गया है । वे सब राजा के पास चले आए और प्रार्थना की कि अपनी अपनी चीज़ें उनको मिल जाएँ ।

राजा ने रूपम से कहा कि वह सब चीज़ों को छाँट कर बता दे कि कौन कौन सी चीज़ें किस की हैं । रूपम ने सौदागर, किसान और पुजारी की चीज़ें अलग अलग रखीं और राजकर्मचारी की चीज़ें एक ओर रख कर कहा—"महाराज, राजमार्ग के मोड़ पर
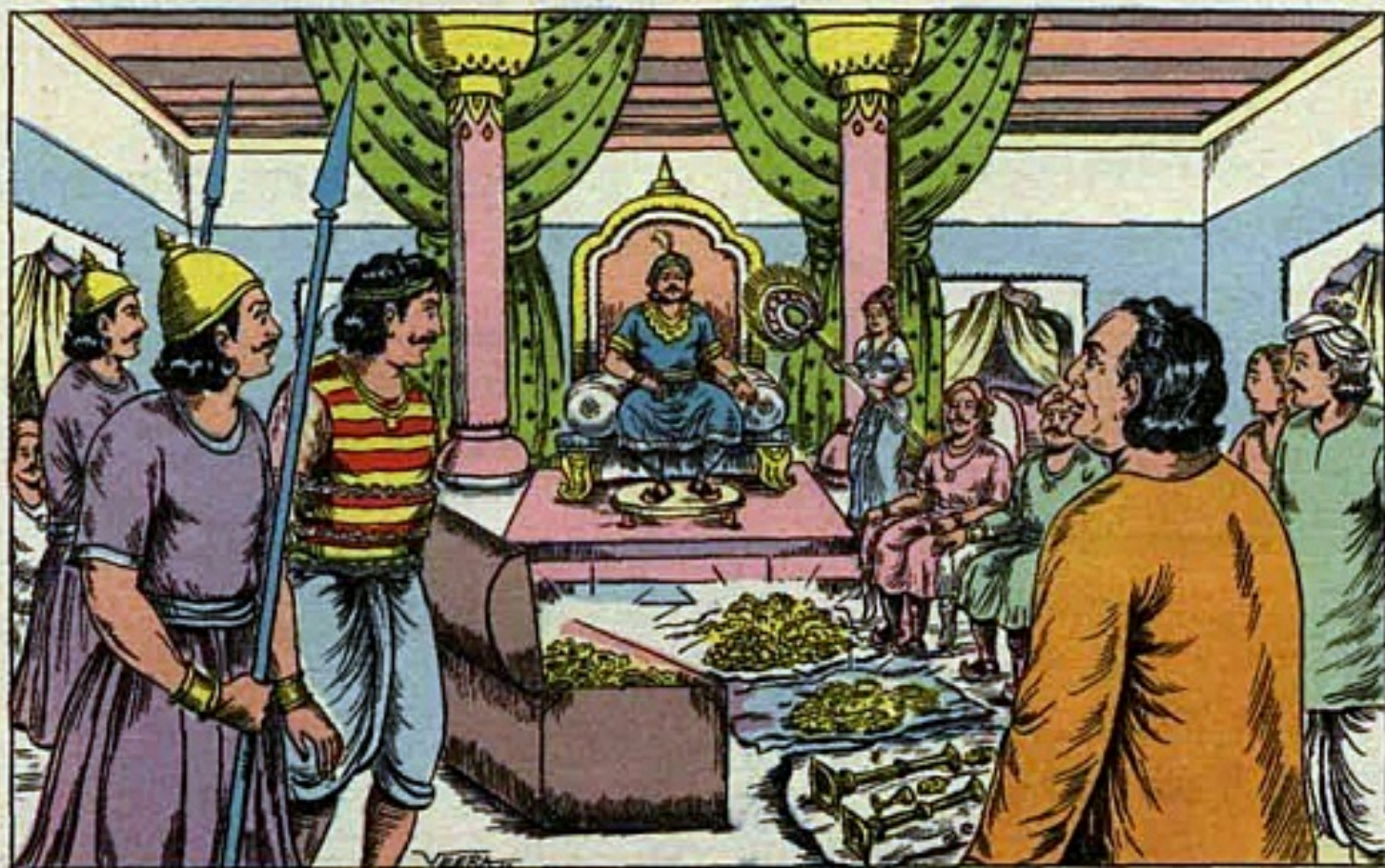
बावड़ी की बाजू में रहनेवाले एक राज-कर्मचारी के घर से ये सारी चीज़ें मैं ने चुराई हैं ।"

यह सुन कर राजा को बड़ा ही आश्चर्य हुआ ।

राजा ने कहा—"इतनी क़ीमती चीज़ें किसी सामंत के घर मिल सकती हैं, एक मामूली राजकर्मचारी के घर कैसे? तुम्हारी बातों पर मैं कैसे विश्वास करूँ, कुछ समझ में नहीं आता । चोरी के बारे में उसने हमें ख़बर भी तो नहीं दी!"

मुस्कुराते हुए रूपम ने कहा—"महाराज, मुझे भी इस बात पर संदेह हुआ कि अपने घर में हुई चोरी की ख़बर उसने आपको क्यों न दी? बाद में मैं ने जान लिया कि यह राज-कर्मचारी अव्वल दर्ज़े का घूसख़ोर है । लोगों से रिश्वत लेने में वह इतना आगे बढ़ा है कि मुझे लगता है, यह मुझ से बढ़ कर भारी चोर यानी काला चोर है । अपने ज़ुल्मों का पता न चले, इस मक़सद से उसने घर के चोरी की बात ज़ाहिर न की ।"

"मेरे दरबार में घूसख़ोर!" राजा चकित हुआ । राजा ने अपने सिपाहियों को भेज कर उस राज-कर्मचारी को बुला लिया ।

राजा ने धमकाते हुए अपने कर्मचारी से पूछा तो उसने अपना ज़ुल्म क़बूल किया । राजा ने उसी समय उस कर्मचारी को जेल की सज़ा सुना दी । रूपम की ओर देखते हुए राजा ने कहा—"तुम्हारी वजह से एक घूसख़ोर को दण्ड मिला । और रिश्वतख़ोर इस से सावधान हो जाएँगे, सुधर जाएँगे । अच्छा, अब तुम्हें क्या सज़ा दूँ ।"

रूपम ने हाथ जोड कर राजा से कहा—"महाराज, मैं ने अपने से भी काले चोर को पकड़ा दिया । इस के लिए तो मुझे पुरस्कार मिलना चाहिए । और आप सज़ा की सोच रहे हैं ।"

इन बातों पर मुस्कुराते हुए राजा ने कहा-"तुम्हें पुरस्कार ही चाहिए न? तब सुनो! आज से तुम चोरी करना छोड़ दो, कोई कामधाम करना सीखो । हाँ, आगे अगर मुझे ख़बर मिली कि तुम चोरी कर रहे हो, तो तुम्हें सूली पर चढ़वा दूँगा ।"

यों चेतावनी देकर राजा ने तुरन्त रूपम को मुक्त करवा दिया ।

वीर हनुमान

इन्द्र का सहारा देखकर राहु अकड़कर धैर्य के साथ आंजनेय की तरफ़ बढ़ा। आंजनेय ने राहु को एक बार स्थिर नज़र से देखा और उसे भी कोई फल समझकर पकड़ने का प्रयास करने लगा। आंजनेय को यूँ उग्र होकर अपनी तरफ़ बढ़ते देखकर राहु घबड़ाया और इन्द्र के पास पहुँचने के लिये बेतहाशा भाग खड़ा हुआ। राहु मन-ही-मन इस कदर घबडाया था कि इन्द्र तक पहुँचते हुए दो-तीन बार रास्ते में लड़खड़ाया। ज्यों-त्यों कर के इन्द्र के पास पहुँच गया। "यह तो मुझे मारने आ रहा है, मुझे बचाओ। मैं तो पूरी गति से भागते आया, इस लिए यहाँ तक पहुँच गया। वरना जाने रास्ते में ही यह क्या ज़ुल्म ढाता। अब आप ही मेरी रक्षा करें।" गिड़गिड़ाकर राहु ने इन्द्र से कहा।

"डरो मत! मैं इसकी ख़बर लूँगा। यह आंजनेय है। बड़ा पराक्रमी है। इसका मुकाबला करना सरल काम नहीं है।" कहकर इन्द्र ऐरावत पर सवार होकर निकल पड़ा।

चिंघाड़ते हुए अपनी तरफ़ आनेवाले हाथी को देखकर आंजनेय ने मन में सोचा, "यह सफ़ेद फल है। अब तक जितने भी फल देखे, यही सब मे अच्छा लगता है। अच्छा है, पहले यही फल खाकर भूख मिटा लूँ।" और वह जोश से ऐरावत की ओर बढ़ा। उसे आते देख ऐरावत भी डर गया और बिदककर भागने को हुआ।

सुग्रीव के पास मन्त्रित्व

ग़ुस्से में आकर इन्द्र ने आंजनेय पर वज्रायुध फेंका । उस प्रहार से आंजनेय का जबड़ा फट गया । खून बहने लगा । बहुत व्याकुल हो गया । वह उदयाद्रिपर गिरकर अचेतन हो गया ।

यह देखकर वायुदेव बड़ा दुखी हुआ । उसे ग़ुस्मा भी आया और उसने विचरना बन्द किया । वायुनेव के इस निर्णय से सभी लोक त्रस्त हुए । किसी की समझ में नहीं आया कि इस समय क्या करें ।

इस बीच अंजना कुटिया में लौट आयी । अन्दर शय्यापर बच्चा नहीं था । उसे बड़ी चिंता हुई कि आखिर बच्चा गया कहाँ? उसके मन में तरह की कल्पनाएँ आने लगीं । अब अपने बच्चे को ढूँढूँ तो कहाँ? बच्चे के लिये वह रोने लगी ।

उसे सान्त्वना देते हुए केसरी ने कहा, "रोओ मत । तुम्हारे पुत्र ने उगते सूर्य को ही फल समझकर पकड़ने की कोशिश की । राहु से यह बात जानकर इन्द्र ने ग़ुस्से में आकर बच्चे पर वज्रायुध फेंका, जिससे हनु फटकर वह उदयाद्रि पर बेहोश पड़ा है । इन्द्र पर रूठ कर वायुदेव ने संचार करना बन्द किया है । इस से भी सभी लोक परेशान है । लेकिन तुम कुछ चिंता मत करो । तुम्हारे पुत्र का इस से कुछ शुभ ही होगा, दुखी मत होना ।"

अंजना इन बातों से कुछ आश्वस्त हो गयी ।

रूठ कर वायुदेव के इस तरह स्तम्भित हो जाने पर सारे देवता व्याकुल हो गये और ब्रह्मदेव के पास जाकर उन्हों ने कथन किया कि इन्द्रने आंजनेय का जबड़ा तोड़ दिया, जिस पर वायु ने अपन चलनवलन बन्द कर दिया । वायुदेव ने विचरना बंद किया इस से सभी लोक व्याकुल हुए जा रहे हैं । फिर उन्हों ने ब्रह्मदेव से प्रार्थना की कि अब वे ही बचाएँ । इस समय और कौन उनकी मदद कर सकेंगे?

ब्रह्मदेव अपने हंसवाहन पर वायु भगवान के पास गये और बोले, "पुत्र! सभी प्राणियों को प्राण देने वाले सर्वव्यापी हो तुम । तुम अपना संचलन बंद करोगे तो सारे संसार का क्या हाल होगा? आश्चर्य की बात है कि तुम इस बुरी तरह ख़फ़ा हो गये! तुम्हारा यूँ रूठना

कहाँ तक योग्य है?"

बेहोश आंजनेय को उठा लाकर वायुदेव ने उसे ब्रह्मा के पैरों पर रख दिया और प्रणाम किया। ब्रह्मदेव के अपने हाथों से छूते ही बच्चे में फिर से चेतना जाग गयी। ब्रह्मदेव ने आंजनेय को आशीर्वाद प्रदान किये।

अब वायु का दुख दूर हुआ और संतोष से वह लोकसंचार के लिये निकला। उसे अपनी ग़लती महसूस हई। अपने किये पर पछतावा हुआ। ब्रह्मदेव ने देवताओं से कहा, "यह लड़का तीनों लोकों को संतोष देनेवाला होगा। साक्षात् शिव का अवतार है यह। यह संसार की भलाई के लिए अनेक महान् कार्य करनेवाला है। इस को सब तरह से सुरक्षित करना इस समय हमारा कर्तव्य है। इसे हम वरदान देंगे।"

तब भूमाता ने आंजनेय को वर दिया, कि उसे वेद मुखतः आ जाएँगे। पानी से कोई ख़तरा न होने का वर वरुण ने दिया। यमराज ने उसे मौत और बुढ़ापे से छूट दे दी। कुबेर ने युद्धों में जीत प्रदान की। विश्वकर्मा ने उसे कनक-कुण्डल दिये। इन्द्र ने उसे हनुमान (हनु-जबड़ा) नाम देकर वर दिया कि उसे वज्रायुध से कोई ख़तरा नहीं रहेगा। ब्रह्मदेव ने उसे दीर्घायु प्रदान करके चिरायु होने का वरदान दिया। अनेक देवताओं से तरह-तरह के वर पाकर अब आंजनेय और शक्तिशाली बन गया। उसे अब किसी से भय न रहा।

इसके बाद ब्रह्मदेव ने वायुदेव से कहा, "तुम्हारा यह पुत्र अपूर्व कीर्ति प्राप्त करेगा, कभी भी नहीं हारेगा। यह पर्वत जैसा धैर्यशाली और वीर होगा। अणिमादि सिद्धियाँ प्राप्त सिद्ध पुरुष होगा, विचार मात्र से वह संपूर्ण विश्व देख सकेगा। यह विरागी और कामरूपी होगा। इस में असामान्य धैर्य, शौर्य और दयागुण होंगे। इस की बराबरी करनेवाला शूर वीर दुनिया में अन्य कोई न होगा। सभी देवताओं से जो वरदान मिला है, इस से उसका पौरुष निखर उठेगा। यह अनेक अद्भुत कार्य करेगा, तुम्हीं यह सब देख लोगे।" इतना कहकर ब्रह्मदेव चले गये।

हनुमान के सूर्य को खाने की कोशिश के बारे में आश्चर्य से बातें करते हुए बाकी देवता

भी वहाँ से चलते बने ।

वायुदेव ने हनुमान को ले जाकर अंजना को सौंप दिया । अपने पुत्र को वापस पाकर वह बहुत खुश हो गयी । उमकी आँखों से आनन्दाश्रु झरने लगे । वहाँ आस पास में नपस्या करनेवाले मुनि जन हनुमान के बारे में सुनकर चकित हुए और मोचने लगे, "सूर्य के किरणों से ही मानव तप जाता है, ऐसे सूर्य को एक बालक जाकर पकड़ ले, यह किननी आश्चर्य की बात है!"

देवताओं द्वारा पुत्र को अनेक वर प्राप्त होने की बात जानकर केसरी भी बहुत खुश हुआ ।

अब हनुमान पलकर बड़ा होने लगा । ज्ञानी होते हुए भी वह खूब नटखट था । शरारतें करने में उसे बड़ा मज़ा आता था । वह कभी चुप न बैठता था । किसी न किसी को परेशान किये बिना उसे चैन न आता था । माँ-बाप हमेशा उसे समझाते रहे कि ऐसे आवारा-गर्दी करना और कमज़ोरों को पीड़ा देना उचित नहीं है । मर्कटचेष्टाएँ करने पर माँ-बाप उसे समझाने की कोशिश करते, फिर भी हनुमान मनमौज़ी बन घूमते-फिरते समय बिताता रहता था ।

ब्राह्मण सोचते रहते, कि लोक-कल्याण के लिये पैदा हुआ यह हनुमान ऐसा तकलीफदेह क्यों हो रहा है? मगर उनकी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा था । उसे कोई शाप वगैरह दें, यह भी तो मुमकिन नहीं था । क्यों कि ब्रह्मा के वरदानों से वह इन सब बातों से ऊँचा उठ चुका था । इतने महान् शक्तिमंपन्न व्यक्ति को रोकनेवाला कोई न रहे, इस का परिणाम कहाँ तक शुभकर होगा? यह मब मोचकर ब्राह्मणों ने बड़ी बुद्धि मे लोककल्याण के लिये ऐमी कामना की, कि हनुमान को खुद अपनी शक्ति का पता ही न चले!

आश्चर्य की बात यह हुई, कि हनुमान यकायक एकदम सात्त्विक हो गया । अपने पुत्र में आये इस परिवर्तन मे अंजना और केसरी दोनों बहुत प्रसन्न हो गये ।

एक दिन अंजना ने हनुमान से कहा, "पुत्र, किष्किन्धा में वाली और सुग्रीव नाम के दो भाई रहते हैं । मेरी माँ अहल्या ने ही उन्हें जन्म दिया है; इमलिये वे तुम्हारे मामा हैं ।

तुम अब किष्किन्धा जाकर सुग्रीव के साथ रहो। किसी कारण वाली और सुग्रीव में झगड़ा हो जाय, तो तुम वाली को मारने मत जाओ।"

माँ को नमस्कार करके उसका आशीर्वाद प्राप्त कर, हनुमान वहाँ से किष्किन्धा जा पहुँचा। वाली और सुग्रीव ने उसे खूब प्यार दिया। हनुमान अब सुग्रीव का मन्त्री बनकर रहने लगा। एक बार हनुमान को वेदशास्त्र सीखने की इच्छा हुई।

दूसरे दिन सुबह नहा-धोकर सूर्योदय के समय हनुमान आकाश में उड़ निकला और सीधे सूर्यदेव के पास पहुँचा। सूर्यदेव को उसने नमस्कार किया।

इसपर प्रसन्न होकर सूर्य ने कहा, "तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। बोलो, कैसे आना हुआ?"

"मैं वेदशास्त्र सीखने की इच्छा से आप के पास आया हूँ।" हनुमान ने उत्तर दिया।

"अच्छा? मगर बात यह है कि, मुझ से शास्त्र सीखना बड़ी टेढ़ी खीर है। मैं मेरु पर्वत के गिर्द तेज़ी से घूमता रहता हूँ न? फिर कोई कैसे कुछ सीख पाएगा?" सूर्य ने पूछा।

इस पर हनुमान ने सुझाया, "महात्मा, तो क्या मैं एक पैर उदयाद्रि और दूसरा अस्तगिरी पर रखकर आप से विद्या प्राप्त करूँ? या आप के आगे-आगे चलते हुए आप से सीखूँ?"

हनुमान की इस लगन पर सूर्य बहुत खुश हुआ। वह बोला, "पुत्र! तुम्हारे जैसा इस सृष्टि में दूसरा कोई नहीं है। तुम दोनों पहाड़ों पर अपने पैर रखकर खड़े हो जाओ-देवता यह देखकर खुश हो जाएँगे।"

"जैसे आप की आज्ञा!" कहकर हनुमान ने सूर्य की प्रदक्षिणा की और उसने अपना शरीर इतना बड़ा किया, कि वह नक्षत्रों से भी ऊपर हो गया और सारे ब्रह्मांड की चारों दिशाओं में भर गया। इस अवतार को देखकर खुद ब्रह्मदेव भी चकित हुए। सारे मुनि और देवता हनुमान को देखकर नमस्कार करने लगे।

सूर्य का आश्चर्य तो वर्णनातीत था। उसने हनुमान से कहा, "तुम प्रत्यक्ष रुद्रावतार हो। तुम तो मेरी कीर्ति बढ़ाने के लिये ही आये हो, वरना मैं तुम्हें क्या उपदेश दे पाऊँगा?"

हनुमान विनम्रता से बोलने लगा,

वाली और सुग्रीव बड़े प्रेम से मिलजुल कर रहते थे। उनका आपसी प्रेम बड़ा ही आदर्श था। उनका पालन करनेवाला पिता ऋक्षविरज चल बसा। तब वानर राज्य का वाली राजा बना और सुग्रीव युवराज!

वाली का बल, पराक्रम बेजोड़ था। उसके साथ युद्ध करके कभी कोई जीत नहीं पाया था। अनेक राजाओं को हराकर विजयगर्व से एक बार रावण भी अकड़ता हुआ वाली के पास आया और उसने वाली को युद्ध के लिये ललकारा। वाली ने रावण के साथ युद्ध किया, उसे खूब पीट कर अधमरा कर दिया। इसके बाद रावण वाली के साथ मित्रता का व्यवहार करने लगा था।

इसके बाद दुंदुभि नामक राक्षस ने वाली को युद्ध के लिये ललकारा। घमंडी दुंदुभी ने पहले हिमवान को ललकारा था; तब हिमवान ने उस से कहा, "देखो, तुम से युद्ध करने की शक्ति मुझ में तो नहीं है, मगर ऐसी काबिलियत रखनेवाला अकेला वाली है। चाहो तो उसे युद्ध के लिये बुलाओ, वह ज़रूर आएगा।"

इस प्रकार उकसाया हुआ दुंदुभि मधुवन में चला आया और उस वन को ध्वस्त करते हुए उसने वाली को युद्ध के लिये ललकारा। इस निमन्त्रण पर वाली आ गया। उसने युद्ध में दुंदुभि को मार कर उसका शरीर दूर फेंक दिया। वह जाकर ऋष्यमूक पर्वत पर गिर गया और उसके खून के छींटे वहाँ तप करनेवाले मुनि मातंग के शरीर पर जा गिरे।

"महात्मा, आपके ये शब्द क्या उचित हैं? आप तो वेदों के मूल पुरुष हैं। कृपया मुझे अपना शिष्य बना लीजिये और मुझे तीनों वेद सिखाइये।" यह कहते हुए हनुमान ने फिर अपना पूर्व रूप धारण किया और वह सूर्य के रथ के सामने खड़ा हो गया।

सूर्य एक घड़ी में नौ लाख सत्तर हज़ार योजनों की दूरी पार करता है। उसी रफ़्तार से हनुमान ने भी सूर्य की ओर मुँह किये स्मृति, पुराण आदि सभी शास्त्र सीख लिये।

अध्ययन समाप्त होने पर हनुमान ने सूर्य भगवान को नमस्कार किया और किष्किन्धा वापस आया। अपने अध्ययन की बात उसने सुग्रीव को बता दी, जिससे सुग्रीव का हनुमान पर प्यार और भी बढ़ गया।
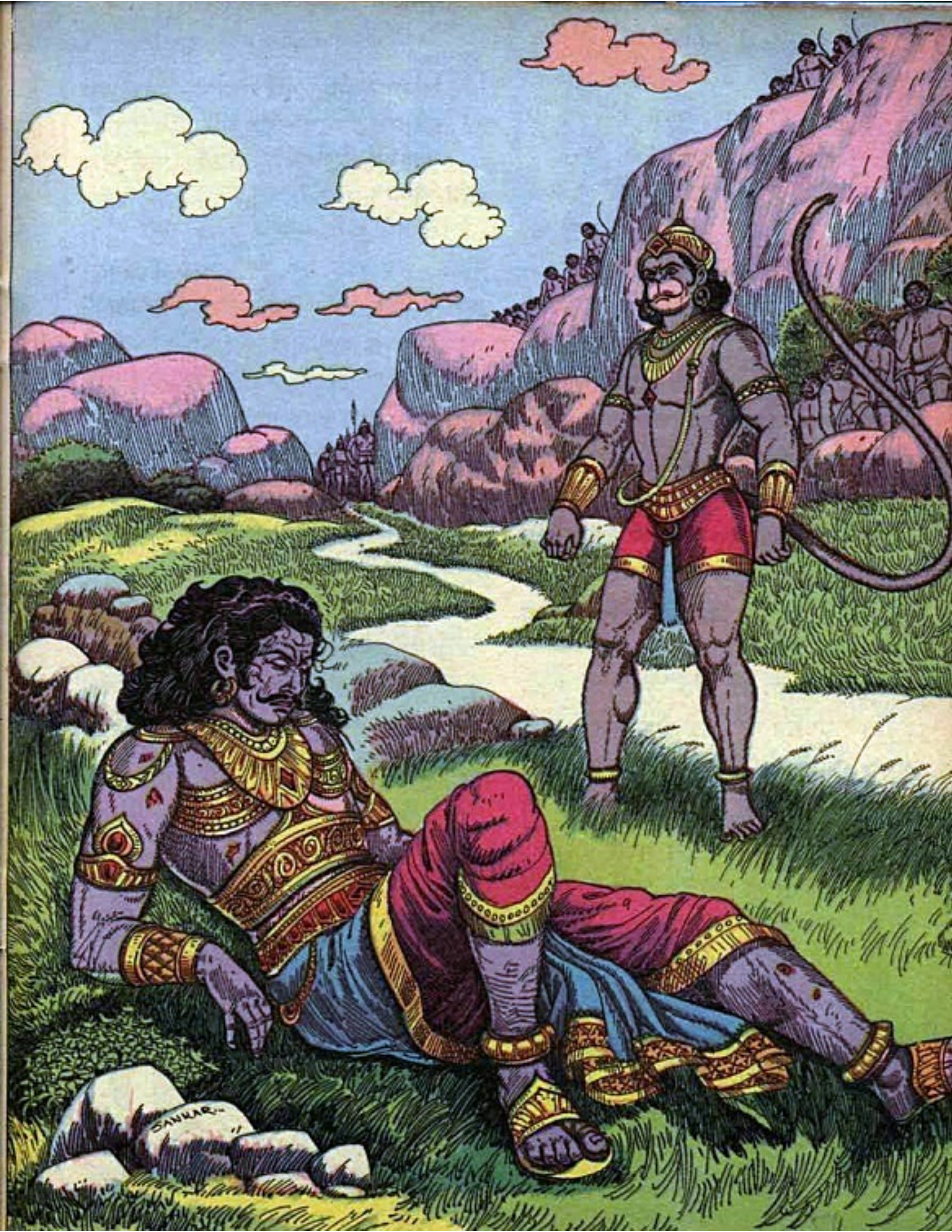
इस पर ख़फ़ा होकर मातंग ने वाली को शाप दिया, कि वाली अगर ऋष्यमूक पर्वत पर कदम रखे तो उसका सिर फट जाएगा ।

इसके बाद दुंदुभी के पुत्र मायावी से वाली की शत्रुता हुई । वाली ने दुंदुभी को मारा था, यह एक कारण तो था ही, और फिर एक स्त्री के मामले में भी उन दोनों में शत्रुता बढ़ी ।

एक आधी रात को मायावी किष्किन्धा के द्वार पर आया और चिल्लाते हुए उसने वाली को अपने साथ युद्ध के लिये ललकारा । वाली नीन्द से जाग गया और वह शत्रु का गर्व सह नहीं सका । वह तुरन्त युद्ध के लिये निकला । सुग्रीव और वाली की पत्नी तारा इन दोनों ने उसे उस वक्त जाने को मना किया । मगर उसने किसी की भी बात नहीं सुनी ।

सुग्रीव वाली को रोक तो नहीं सका, इसलिये वह खुद भी उसके पीछे चला गया । दोनों भाइयों को देखकर मायावी डरकर भागने लगा । वाली और सुग्रीव उसे खदेड़ते हुए उसका पीछा करने लगे । मायावी उन्हें बहुत दूर ले गया और आख़िर पहाड़ की एक ऐसी गुफ़ा में घुस गया, जिसका प्रवेशद्वार झाड़-झंखाड़ों से ढँक गया था ।

"मैं जब तक मायावी को मारकर लौट आऊँ, तब तक तुम मेरा यहीं इन्तज़ार करो ।" इस प्रकार सुग्रीव से कहकर वाली गुफ़ा में चला गया ।

वाली बहुत देर तक वापस नहीं आया, तब सुग्रीव के मन में डर हुआ कि शायद वह मर चुका होगा । इतने में गुफ़ा से खून की धारा बहकर बाहर आयी । उस गुफ़ा से आनेवाली आवाज़ भी राक्षस के जैसी थी ।

तब सुग्रीव को यक़ीन हुआ कि अपना भाई ही मर चुका है । तब बड़े दुख से गुफ़ा के द्वार पर पत्थर रखकर उसने वह बन्द किया, भाई के लिये जल प्रदान करके भारी हृदय से वह किष्किन्धा लौट पड़ा । वाली की हकीकत जानकर सभी वानर दुखी हुए । उन्होंने सुग्रीव को राजा बना दिया ।
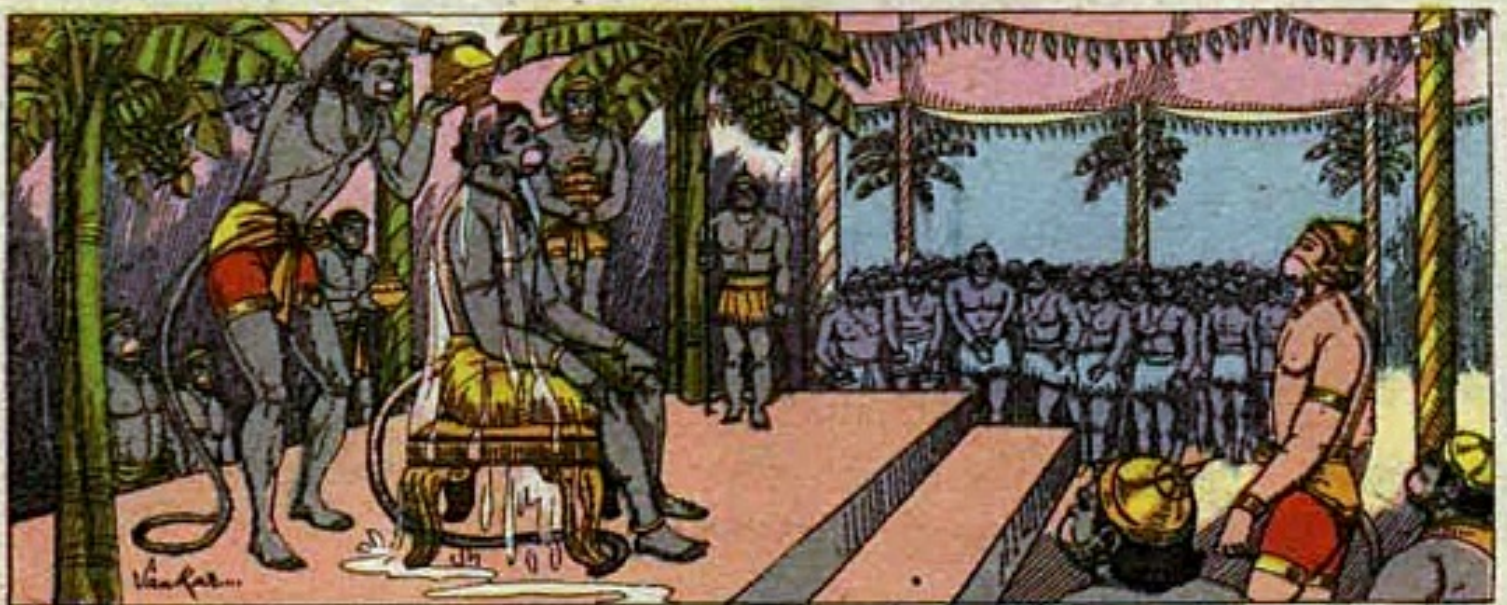
विनीला और वनदेवी

गंगावर गाँव में कमलापति और वारिजा नामक दंपती के दो बेटे और एक बेटी थी । बेटी का नाम था विनीला । वह अब सयानी हो चुकी थी, फिर भी उस के लिए शादी का कोई रिश्ता नहीं आया था । इसकी वजह थी विनीला का मोटापन और उसका झगड़ालू स्वभाव । उस के मुँहफट होने के कारण उस के माँ-बाप ही नहीं, अड़ोस-पड़ोस के लोग भी उस से डरते थे । वह रास्ते से चलती, तो कोई उसकी तरफ़ देखते न थे, सभी उस से किनारा करते थे । सब सोचते थे कि उस की मोटाई और ज़बाँदराजी कम होने पर ही उस की शादी होगी । पर उसे यह बात बताने की हिम्मत किसी में न थी ।

इस बीच एक बार पड़ोसवाले गाँव से विनीला की चाची मेहमान बन कर आई । उसे विनीला से बहुत प्यार था, पर उसके स्वभाव की विचित्रता से वह एकदम अपरिचित थी । एक दो दिन में उसने सब रंग देखे । विनीला के स्वभाव के बारे में जान कर उस ने समझाने की कोशिश की ।

विनीला ने इस पर झुँझला कर कहा – "मुझ को नसीहत देनेवाली तुम कौन होती हो? मेरे बाप ने खूब कमाया है, अपनी मर्ज़ी से खाऊँगी । मुझे कोई सुनाने लगे तो मैं नहीं चुप बैठनेवाली । ईंट का जवाब पत्थर से मिलेगा, समझी चाची? मेरी शादी की तुम्हें क्या पड़ी है? तुम अपने गाँव चली जाओ यही अच्छा है, सुनो कान खोल कर!"

इसी तरह विनीला के और दो-तीन रिश्तेदारों ने भी नेक नसीहत देने की कोशिश की । विनीला ने उन्हें गालियाँ दीं, यहाँ तक कि मारने के लिए भी हाथ उठाया । अब विनीला की शादी के बारे में सोचना सब ने छोड़ दिया, सारा भार भगवान पर

प्रेमलता पांडेय

डाल दिया ।

हर कोई सोचने लगा—विनीला को राह रास्ते पर लाना टेढ़ी खीर है । उसका स्वभाव ही ऐसा झगडालू है कि अपने हित की बात भी उसे अच्छी नहीं लगती । बड़ी विचित्र है यह लड़की । इस से शादी करके कौन युवक सुखी होगा? जो कोई इस से शादी करेगा, जीवन भर झगड़ता ही रहेगा । इस लिए क्यों किसी का जीवन बरबाद करें? विनीला जनम भर कुँआरी ही रहे तो रहे ।

विनीला के दोनों बड़े भाई बहन की शादी का इंतज़ार करते रहे । आखिर ऊब कर दोनों ने अपनी पसंद की लड़कियों से विवाह कर लिया ।

विनीला के माँ-बाप बूढ़े हो चुके थे । वे चाहते थें कि मरने से पहले अपनी बेटी की शादी देखते का सौभाग्य हो । भाभियों के घर में आने पर भी विनीला की आदत में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं आया । घर के छोटे से छोटे काम में भी वह कभी हाथ न लगाती । कुछ दिन भाभियों ने सह लिया, फिर उन दोनों ने भी विनीला को उल्टे जवाब देना शुरू किया । ननद-भाभियों के बीच रोज़ाना झगड़ों का सिलसिला शुरू हुआ । विनीला रूठ कर गाँव के बाहर के तालाब के पास जाती और बरगद के विशाल वृक्ष की जटाओं से झूला बना कर दिन भर झूलती रहती । अंधेरा होते होते जब भाई खेत से लौटते, बहन को ढूँढ़ते वहाँ आते और किसी तरह बहन को मनवा कर घर ले जाते ।

भाइयों ने विनीला को बहुत समझाया—"बहन, अब तुम छोटी लड़की नहीं हो । ज़रा अपनी ज़िम्मेदारी समझ लो । घर के काम में तुम कुछ भी मदद नहीं करती हो । रसोई-कला से तुम बिलकुल अनभिज्ञा हो । शादी करके अगर तुम्हें सुखी बनना हो, तो ये सारी आदतें तुमको छोड़ देनी चाहिए । तुम्हें अपने में बहुत परिवर्तन लाना होगा । वरना तुम्हारे जैसी अल्हड़, ज़बाँदराज़ और झगडालू लड़की से कौन शादी करना चाहेगा? अगर कोई करेगा भी तो जनम भर पछताएगा । तुम समझती क्यों नहीं इन सब बातों को?

तुम्हारी वजह से हमारी भी बदनामी होती है समाज में! तुम्हारी भाभियाँ तुम से एकदम

नाराज़ हैं। तुम्हारी वजह से हमें रोज़ खरी-खोटी सुनती पड़ती है!"

पर विनीला पर इसका ज़रा भी असर नहीं हुआ। वह एक कान से सुनती, दूसरे से छोड़ देती। अपने 'गुणों' को उसने ज्यों-का-त्यों बना कर रखा।

एक दिन भाभियों से लड़ कर विनीला घर से निकली और तालाब के किनारेवाले बरगद की तरफ़ जाने निकली। भूख वह ज़रा भी सह नहीं सकती थी। ऐसे समय वह घर से पैसे लेकर निकलती, रास्ते में दूकान से खाने की काफी चीज़ें खरीदती और बरगद के झूले में झूलती-खाती वक़्त बिता देती। उस दिन भी विनीला मूँगफली और गुड़ की भेलियाँ खरीद कर उन्हें साड़ी के दामन में बाँध कर तालाब के किनारे पहुँची।

वहाँ बरगद के झूले में कोई स्त्री झूलती हुई दिखाई पड़ी। अपने झूले में दूसरे किसी को झूलते देख विनीला को बड़ा गुस्सा आया। दौड़ी दौड़ी उस स्त्री के पास जाकर डाँटना शुरू किया—"कौन हो तुम? मेरे झूले में बैठने का साहस तुम ने कैसे किया?" विनीला ने उसकी बाँह पकड़ कर उसे ज़ोर से खींच लिया।

आँखें मूँद कर झूला झूलनेवाली वह स्त्री ज़ोर से चिल्ला उठी और फ़िर ग़ायब हो गई।

उस स्त्री को ग़ायब होते हुए देख कर विनीला का ग़ुस्सा और भी तेज़ हो गया। "कौन हो तुम? धीरज के साथ मेरे सामने आ जाओ। तुम चाहे भूतनी हो या प्रेतनी—यह विनीला किसी से डरनेवाली नहीं है! किसी तांत्रिक की मदद के बिना मैं खुद तुम्हें इस पेड़ के नीचे गाड़ दूँगी। अगर तुम कोई देवी-देवता हो, तो भी मैं चुप नहीं रहनेवाली, तुम्हें अवश्य पकड़ लूँगी और मज़ा चखा दूँगी।" हुंकारते हुए विनीला ने कहा।

तब वह स्त्री विनीला के सामने प्रत्यक्ष हुई और कहने लगी—"मैं पासवाले जंगल की वनदेवी हूँ। इधर से गुज़र रही थी, तुम्हारा झूला देखा। और झूलने लगी। मैं नहीं जानती थी कि इस पर तुम्हें इतना गुस्सा होगा। चीखते-चिल्लाते मेरे बारे में प्रचार मत करना। वरना वह लकड़हारा मुझे ढूँढ़ते हुए आएगा और मुझ से वरदान माँगेगा।"

अब विनीला शान्त हुई और वनदेवी से

कहने लगी—"ठीक है! मैं तुम्हारे बारे में किसी से कुछ नहीं कहूँगी । पर मुझे भी एक वर दो कि मेरी शादी जल्दी हो जाए ।"

"हाँ, तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी!" कहते हुए वनदेवी वहाँ से अदृश्य हो गई ।

दूसरे दिन सुबह एक युवक एक पेटी और बिस्तर लिये विनीला के घर पहुँच गया । उस समय विनीला आराम से बैठे नाश्ता कर रही थी । युवक ने उस की तरफ़ देखते हुए पूछा—"यहाँ कोई कमरा किराये पर मिल सकता हो तो बताइएगा?"

इतने में विनीला के भाई बाहर आये । उस युवक का परिचय पूछा । उसका नाम था पवन । उस गाँव में अध्यापक बन कर आया था । शादीशुदा नहीं था । उसका अपना कोई न था । बिलकुल अकेला था वह!

विनीला के दोनों भाइयों ने आपस में सलाह की । फिर बरामदेवाले एक कमरे को साफ़ करवाया और उसे मामूली किराये पर पवन को दे दिया । बहुत खुश हो कर पवन ने अपना सामान उस कमरे में रख दिया ।

पवन सुबह उठता, नहा-धोकर खाना पका लेता । खाना खाकर वह पाठशाला चला जाता, तो फिर रात को ही लौट आता । जब कभी विनीला उसे दिखाई देती, वह बड़ी लगन से उसे देख लेता ।

यों कुछ दिन गुज़रे । एक दिन पवन ने विनीला के भाइयों से कहा कि वह विनीला से शादी करना चाहता है । उसने कहा कि विनीला के हाथों बना खाना खाने के बाद ही वह सगाई कर लेगा । कई वर्षों से वह अपना खाना खुद बनाता था, उस से अब वह ऊब गया था । यही बात उसने विनीला के भाइयों से कही, और बताया कि अच्छा खाना बनानेवाली पत्नी मिल जाए तो वह अपने भाग्य को सराहेगा ।

विनीला के भाई बहुत खुश हुए । उन्होंने घर में सब को यह बात बता दी । भाइयों ने विनीला से कहा कि उस दिन खाना वही पकाये । पवन की शर्त है कि रसोई बनाते समय और कोई उसकी मदद न करे ।

रसोई बनाते समय विनीला सोचने लगी—वनदेवी की कृपा से पवन के साथ अपनी शादी हो ही जाएगी । इस लिए अब कुछ बुद्धिमानी से काम करना चाहिए । पवन

रसोई के लिए आदी हो चुका है, अगर अपनी रसोई उसे अच्छी लगे तो फिर रसोई का काम वह कभी नहीं करेगा। ऐसा हुआ तो उसे जीवन भर रसोई-घर में ही सड़ना पड़ेगा। अब विनीला ने जानबूझ कर रसोई के सभी पदार्थ बिगाड़ दिये। पदार्थ ऐसे बनाये कि कोई खाए तो पछताए।

पवन के साथ सभी भोजन के लिए बैठ गये। विनीला का पकाया खाना किसी से खाया नहीं गया। नाक-भौं सिकोड़ कर एक दूसरे की ओर देखते हुए सभी खाना खा रहे थे। पवन बीच में ही उठ कर चला गया। सब ने विनीला को खूब फटकारा, खरी-खोटी सुनाई। लापरवाही से सिर हिलाती हुई विनीला चुप रही।

दूसरे दिन सुबह जब घर के सब लोग जागे, तो पवन का कमरा खाली हो चुका था। उस कमरे में एक चिट्ठी मिली, जिसमें लिखा था– "विनीला का बनाया खाना हज़म करने की ताक़त मुझ में नहीं है। वनदेवी ने वरदान दिया हो, तो भी विनीला से शादी करनेवाला आदमी मिलना मुश्किल ही है।"

यह चिट्ठी पढ़ कर सब से ज़्यादा दुख विनीला को हुआ। उसने नहीं सोचा था कि वनदेवी का वरदान यों बेकार साबित हो जाएगा। उस दिन से घर में सब उसकी उपेक्षा करने लगे। विनीला ने तालाब के किनारे वनदेवी को कई बार देखने की कोशिश की, पर दुबारा उसके दर्शन नहीं हुए।

इस घटना के बाद विनीला में भारी परिवर्तन आया। वह काम में भाभियों की मदद करने लगी। इस तरह परिश्रम करने से विनीला का मुटापा कम हुआ। अब विनीला खूब सुंदर दिखाई देने लगी।

कुछ दिनों के बाद पड़ोस के गाँव से एक मोटा किसान विनीला को अपनी पुत्र-वधू बनाने की इच्छा से आया। घर के सब लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। बड़ी शान से विनीला की शादी इस सुयोग्य वर के साथ हो गई। आख़िरकार वनदेवी का दिया वरदान सफल हुआ।

सुलतान की बिल्ली

मिसार शहर में मोहम्मद नाम का एक सौदागर रहता था । एक बार वह माल-असबाब और नौकर-चाकरों के साथ सौदा करने निकला । कई शहरों में रुक कर वह अपना माल बेचता रहा, और वहाँ जो माल सस्ता मिला उसे खरीदता रहा । इस तरह सौदा करते हुए सफ़र करता रहा । महीनों बाद मोहम्मद एक बड़े शहर में पहुँच गया ।

उस शहर में थोड़े दिन आराम करने की इच्छा से मोहम्मद अपने साथियों के साथ एक मुसाफ़िरखाने में ठहरा । मुसाफ़िरखाने की व्यवस्था अच्छी थी । इस लिए कुछ दिन वहाँ आराम से रहा । मुसाफ़िरखाने में उतरे साथियों के साथ गपशप करने में उसे बड़ा मज़ा आता ।

तब एक सौदागर मोहम्मद के पास आया । उस ने मोहम्मद से कहा – "दोस्त, यहाँ आनेवाले सौदागर अच्छे-ख़ासे नज़राने लेकर यहाँ के सुलतान को भेंट करते हैं । यह इस शहर का रिवाज़ है । नज़राना देनेवाले सौदागर को सुलतान शतरंज खेलने का निमंत्रण देता है ।

मोहम्मद के मन में सुलतान से मिलने की ज़रा भी इच्छा न थी । फिर भी रिवाज़ जान कर अपने पास की कुछ क़ीमती चीज़ें मोहम्मद ने सुलतान को भेंट में दीं ।

नज़राने लेकर सुलतान खुश हुआ, सौदागर से कुशल-क्षेम पूछा और व्यापार के बारे में बातचीत की । उस के बाद सुलतान ने कहा – "आज रात को तुम मेरी कोठी पर आ जाना, हम दोनों शतरंज खेलेंगे ।"

रात को मोहम्मद सुलतान के महल में पहुँच गया । सुलतान ने उसे अपने सामने बिठाया ।

सुलतान ने मोहम्मद से कहा – "खेल शुरू करने के पहले इस के नियम समझ लो । मेरे

अरब की लोककथा

पास एक होशियार बिल्ली है। वह बिल्ली रात भर अपनी पूँछ पर सात ढिबरियाँ खड़ी रख सकती है। हम जब तक खेलने रहेंगे, तब तक वह अपनी पूँछ पर सात दियों को खड़ा रख सके, तो मुझे तुम्हारी सारी संपत्ति मिल जाएगी और मैं तुम्हें कारागृह में बंद कर दूँगा। ऐसा न होकर, अगर बिल्ली हिले और एक भी दीपक नीचे गिरे तो मैं हार मान जाऊँगा। ऐसी हालत में मेरा ख़ज़ाना तुम को मिल जाएगा और तुम मेरे साथ चाहे जो सलूक़ कर सकते हो।"

बेचारा मोहम्मद क्या कह सकता था? मजबूर था। न वहाँ से भाग सकता था, न खेलने से इन्कार कर सकता था। मन मसोस कर अपनी बदनसीबी पर चुप रहा। अपनी जान-ज़ायदाद की उम्मीद छोड़ कर परेशान बैठा रहा।

सुल्तान की बिल्ली लायी गई। उस की पूँछ पर सात ढिबरियाँ रखी गईं। दीपक जलाये गये। फिर सुलतान और मोहम्मद शतरंज खेलने लगे।

तीन रात और तीन दिन खेल चलता रहा। बिल्ली न हिली, न डुली। उस की पूँछ पर रखी ढिबरियाँ ज़रा भी न हिलीं, दीपक जलते ही रहे। मोहम्मद का सब्र ख़तम हुआ। उसने अपनी हार मान ली। मुसाफ़िरखाने से सारा माल-असबाब मँगवा कर उसे सुलतान के हवाले कर दिया गया। सुलतान ने मोहम्मद को तहख़ाने में बंद करवा दिया।

उधर मोहम्मद की बीबी ज़रीना अपने शौहर की बाट जोहती रही। लेकिन मोहम्मद आया नहीं। मुद्दतों बाद मोहम्मद का एक नौकर वापस आया। इस हादसे के बारे में सारा हाल रोते हुए उस ने ज़रीना से कहा। ज़रीना ने सारी बातें सुन लीं। थोड़ी देर सोचती रही। फिर ज़रीना ने अपने शौहर को रिहा करने की ठान ली। उस ने कई चूहों को पकड़वा कर एक संदूक में बंद कर रखा। साथ में थोड़ा सोना लिया और मर्द के वेष में नौकर-चाकरों को लेकर सुलतान के शहर में पहुँची।

वहाँ एक मुसाफ़िरखाने में ठहर गई। नौकरों के हाथ में सोने के थाल में क़ीमती नज़राना धर दिया और सुलतान की कोठी पर पहुँच गई। ज़रीना ने अपने नौकरों से कहा

कि वह जब सुलतान से शतरंज खेलती रहेगी, तब वे एक-एक चूहे को संदूक से उस कमरे में छोड़ते रहें ।

ज़रीना का वेष देख कर सुलतान ने उसे पुरुष ही समझा । नज़राना लेकर शतरंज का निमंत्रण दिया और खेल के नियम भी बता दिये ।

ज़रीना और सुलतान दोनों शतरंज खेलने बैठ गये । बिल्ली पत्थर की मूरत की भाँति जहाँ की तहाँ बैठी रही ।

खेल शुरू होने पर थोड़ी देर बाद ज़रीना के नौकरों ने एक चूहा कमरे में छोड़ दिया । नौकर पासवाले बंद कमरे में छिप कर बैठ गये, ताकि कोई उन्हें देख न सके । जब वह चूहा बिल्ली के सामने से गुज़रा, बिल्ली के मन में उसे पकड़ने की इच्छा हुई, मगर किसी तरह उसने अपनी इच्छा को दबा रखा । क्यों कि सुलातान उस की ओर तेज़ नज़र से देख रहा था ।

और थोड़ी देर बाद ज़रीना के नौकरों ने एक और चूहे को कमरे में छोड़ दिया । उस के बाद एक साथ तीन-चार चूहे छोड़े । चूहे खेल के कमरे में आये, बिल्ली को देख कर घबड़ा गये । फिर उछल-कूद करते हुए दौड़ने लगे । इतने चूहों को एक साथ देखते ही बिल्ली का संयम डाँवाडोल हो गया । बिल्ली अपनी जगह से उछल कर चूहों को पकड़ने के लिए निकली । उस की पूँछ पर टिके सातों दीपक फर्श पर गिर गये ।

तुरंत ज़रीना के नौकर आये और सुलतान को मारने लगे। इस पर सुलतान चीखने-चिल्लाने लगा । फिर भी सुलतान के नौकर नहीं आये, क्यों कि वह बड़ा ही बेरहम और ज़ुल्मपसंद सुलतान था । वे सुलतान से नफ़रत करते थे ।

ज़रीना ने सुलतान को तहखाने में बंद करवाया और उस तहखाने में क़ैद अपने शौहर तथा दूसरे सौदागरों को रिहा कर दिया । फिर अपने शौहर और सुलतान की दौलत ले कर ज़रीना अपने मुल्क लौट चली ।

लड्डू जो द्वार में न घुसे!

एक दिन एक आदमी ककड़ियों से भरी बोरी सिर पर रख कर उन्हें बेचने के लिए जा रहा था। निठल्ले नित्यानन्द ने ककड़ीवाले को रोका और अपने बेतुके सवालों से उसे और परेशान किया। इस पर झल्ला कर ककड़ीवाले ने कहा – "बड़ा आया खरीदनेवाला! जा जा, काहे को मेरा वक़्त बरबाद करता है?"

नित्यानंद को गुस्सा आया। उसने ककड़ीवाले से कहा – "अरे, तू क्या जानता है इस नित्यानन्द के बारे में? भाव तय करो, अभी तुम्हारी बोरी भर ककड़ियाँ खा लूँगा।"

"तुम्हारे जैसे चार और आयें तो भी ये सारी ककड़ियाँ खा नहीं पाएँगे!" ककड़ीवाले ने कहा।

निठल्ले नित्यानन्द ने अपनी आदत के मुताबिक कहा – "बाज़ी लगाओ!"

"ये सारी ककड़ियाँ अगर तुम खा लोगे, तो मैं तुम्हें ऐसा लड्डू खिलाऊँगा जो द्वार में न घुस पाए।" ककड़ीवाले ने कहा।

"यदि द्वार में न घुसनेवाला लड्डू दिलाओगे तो मैं तुम्हें सौ रुपये दूँगा। अगर तुम ऐसा न कर सके, तो तुम्हें मुझे सौ रुपये देने पड़ेंगे।" नित्यानंद ने कहा।

ककड़ीवाला मान गया। उसने ककड़ियों की बोरी नीचे उतार दी। निठल्ला नित्यानन्द एक-एक ककड़ी उठा कर उसे कुतरता, और थूक देता। इस तरह सारी ककड़ियाँ कुतर कर उस ने कहा-"देखो, सारी ककड़ियाँ मैं ने खा लीं। मैं बाज़ी मार गया।"

ककड़ीवाले ने कहा-"क्या मज़ाक कर रहे हो यार? पूरी ककड़ियाँ खा कर दिखाओ। तब मान लूँगा। यह खाना क्या खाना है? यूँ मुझे धोखा देने की कोशिश मत करना।"

कमला शर्मा

"मज़ाक? क्या कहते हो? सारी ककड़ियाँ मैं ने खा लीं हैं। किसी से भी पूछो, यही बताए गा। ये ककड़ियाँ कोई नहीं लेगा, हर कोई यही कहेगा कि ये खाई हुई ककड़ियाँ हैं।" निठल्ले ने कहा।

तब तक कुछ लोग जमा हुए। सब ने बात सुनी। निठल्ले की बात का समर्थन करते हुए लोगों ने दाद दी। लाचार हो कर ककड़ीवाला खाली बोरी ले कर जाने को हुआ। निठल्ले ने उसे टोकते हुए कहा—"द्वार में न घुसनेवाला लड्डू कहाँ है? लाओ।"

ककड़ीवाले का चेहरा फक पड़ गया। उस की तरफ़ से लोगों ने कहा—"बेचारा, ऐसा लड्डू कहाँ से लाएगा? यह दस रुपये देगा, ले लो।"

"नहीं, बाज़ी हारने पर सौ का वादा उसने किया था! मुझे सौ रुपये दिलवाइए।" निठल्ले नित्यानन्द ने कहा। लोगों ने बहुत कहा, लेकिन वह टस से मस न हुआ।

ककड़ीवाला घबरा गया। सौ रुपये कहाँ से लाएगा? अचानक उसके मन में एक विचार कौंधा। मिठाई की दूकान से एक रुपये का एक लड्डू ले आया और उसे नित्यानन्द को देना चाहा।

"द्वार में न घुसनेवाला लड्डू चाहिए, यह छोटा-सा लड्डू मैं नहीं लूँगा।" नित्यानन्द ने कहा।

"द्वार में न घुसनेवाला लड्डू यही तो है!" कहते हुए ककड़ीवाला बाज़ू के घर के द्वार के पास लड्डू रखते हुए बोला—"अरे लड्डू! घुस! द्वार में घुस लेना रे!"

लड्डू न हिला। ककड़ीवाले ने कहा—"द्वार में न घुसनेवाला लड्डू लाया हूँ न मैं?"

"हाँ, हाँ!" कह कर निठल्ला नित्यानन्द खिसकने की कोशिश करने लगा। उसे पकड़ कर ककड़ीवाले ने कहा—"कहाँ जा रहे रहे हो? बाज़ी के सौ रुपये दे कर जाना भई!"

लाचार हो निठल्ले ने सौ रुपये उसे दे दिये। साथ साथ बाज़ी लगाना भी छोड़ दिया।

अमरीका के अरीजोना जंगल में कई ऐसे वृक्ष हैं, जो पत्थर बन गये! मगर कैसे? बीस करोड़ वर्ष पहले जो तूफान आये, उन की वजह से २०० फुट ऊँचे वृक्ष उखड़ कर धराशायी हो गये। बाद में उन पर मिट्टी और रेत की परतें जमती गयीं और कालक्रम में ये वृक्ष पत्थर के वृत्त-खण्डों में बदल गये। सात करोड़ वर्ष पूर्व से जब धरती बढ़ने लगी, तो ये वृत्त-खण्ड उभरने लगे। रेतीले सफ़ेद पत्थरों को चीर कर ये धरती से बाहर निकले।

अंटार्किटका के दक्षिणी छोर पर ज़िंदा ज्वालामुखी पर्वत है-एरिबस पर्वत। इस की ऊँचाई है १२, ४५० फुट। इस की चोटी के मुँह का व्यास है २,६०० फुट।

छुईमुई

मिमोसा पुडिका यानी छुईमुई नाम का एक अति कोमल पौधा है, जिसे केवल छूने से इस के पत्ते सिकुड़ जाते हैं। फिर कुछ क्षणों के बाद वे खुल जाते हैं।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर १९९० के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

Devidas Kasbekar

S. G. Seshagiri

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ अगस्त १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जून १९९० की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : मूर्ति मंदिर सजाए!

द्वितीय फोटो : मैना मन बहलाए!!

प्रेषक : बाबू ओम्, द्वारा श्री बाबूलाल, मानिकपुर-४९६ ५५१ रायगढ़ (म. प्र.)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीज, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिए :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६
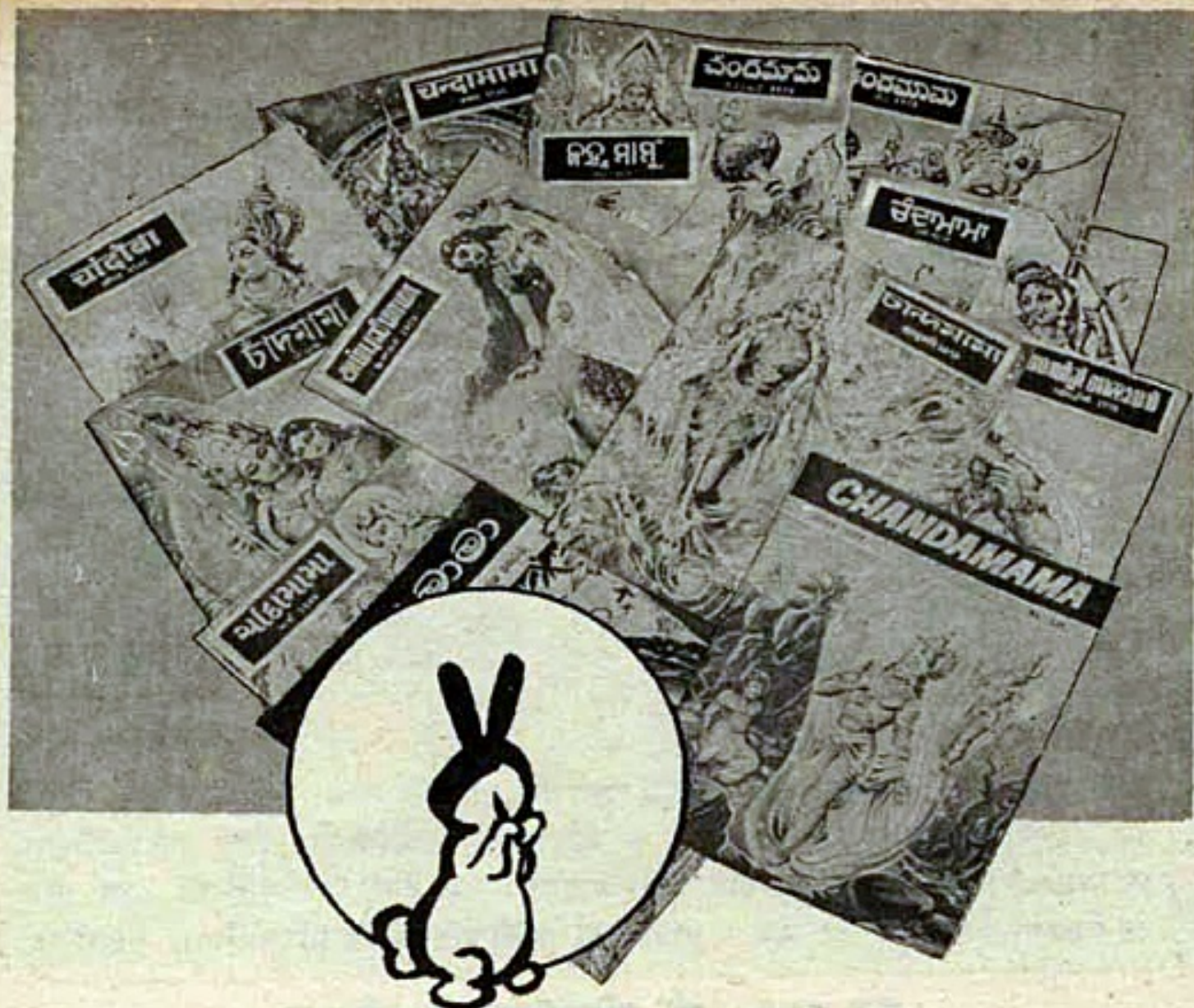
चन्दामामा

जो प्रकट करती है भारत का महान वैभव–अतीत और वर्तमान का–सुंदर सुंदर
कथाओं द्वारा महीने बाद महीने ।

रंगीन चित्रों से सजकर ६४ पृष्ठों में फैली यह पत्रिका प्रस्तुत करती है चुनी हुई कई रोचक-प्रेरक
पुराण कथाएँ, लोक कथाएँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, महान विभूतियों की जीवन-झलकियाँ,
आज की अनेक मोहक कथाएँ और जानने की बातें जो हों सचमुच काम की ।

निकलती है ११ भाषाओं में और संस्कृत में भी ।

चन्दे की जानकारी के लिए लिखें इस पते पर:

डाल्टन एजन्सीज, १८८ एन.एस.के. रोड, मद्रास-६०० ०२६.

School Children!

ENTER THE

'YOUNG GENIUS' CONTEST!

Win a full year's scholarship!
And hundreds of other exciting prizes!

See the July & August issues of Junior Quest for details.

CRUNCHY, MUNCHY SWEETS
The coconut cookie treat!
nutrine
COOKIES
THE FINEST, WIDEST RANGE
nutrine
India's largest selling sweets
Vikesh/NC/8815